Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

# शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष ▸ 09 | अंक ▸ 10 | हिन्दी (मासिक) | अक्टूबर ▸ 2022 | पृष्ठ ▸ 16 | मूल्य ▸ ₹ 12.50

10 हमारे श्रेष्ठ कर्म से बढ़ती है आत्मा की शक्ति...

04 वैश्विक शिखर सम्मेलन: सुरों की जुगलबंदी से कला की साधना...

## वैश्विक शिखर सम्मेलन ▸ देश-विदेश से विभिन्न क्षेत्रों की जानीं-मानीं हस्तियों ने की शिरकत

**04** चार दिन चला सम्मेलन | **04** मेडिटेशन सत्र हुए | **19** विधायक देशभर से आए | **5000** से अधिक लोग देश-विदेश से पहुंचे | **06** खुले सत्र हुए

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड शांतिवन में चार दिनी आयोजन

# दुनिया में आध्यात्म और शांति की वैश्विक राजधानी है आबू

### योग-आध्यात्म से आएगी दुनिया में शांति

सुप्रीमकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और राज्यसभा सांसद न्यायमूर्ति रंजन गोगोई ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ वंडलफुल आर्गेनाइजेशन है। यहां से लोगों को मूल्य, सभ्यता, संस्कृति, योग, आध्यात्म की शिक्षा दी जा रही है। आज के युग में ऐसे कार्यों की बहुत जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ कर्मयोग में विश्वास रखती है। यहां से प्रैक्टिकल में समाज को ज्ञान दिया जा रहा है। योग से ही दुनिया में बदलाव आएगा। योग-आध्यात्म से ही दुनिया में शांति आएगी। यहां से आत्मा के ज्ञान द्वारा दुनिया को शांति का संदेश दिया जा रहा है। आध्यात्म में ही दुनिया को एक करने की, एकता के सूत्र में पिरोने की ताकत है। आध्यात्म और योग तो हमारी प्राचीन विरासत है। हमारी भारतीय संस्कृति की खूबी और विशेषता है। आज भी विश्व की निगाहें भारत पर हैं। संस्थान कई सामाजिक क्षेत्रों में भी समाजोपयोगी कार्य कर रहा है। शांतिवन में आकर अद्भुत शांति की अनुभूति होती है। निश्चित तौर पर मेडिटेशन करने से मन को असीम शांति मिलती है। मानसिक विकार दूर होते हैं। मन शक्तिशाली बनता है। जब तक हम अपने अंतर्मन को नहीं पहचानेंगे, स्व के ऊपर काम नहीं करेंगे तो बदलाव नहीं आएगा। बदलाव की शुरुआत खुद से होती है।

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन परिसर में चार दिन चले वैश्विक शिखर सम्मेलन में छह सत्र आयोजित किए गए। इसमें देश-विदेश से 50 से अधिक जानीं-मानीं शख्सियतों ने मंथन-चिंतन कर ये निष्कर्ष निकाला कि योग और आध्यात्म से ही विश्व में शांति आएगी। भारत आदिकाल से शांति का पक्षधर रहा है। हमने कभी दुनिया जीतने के नहीं खुद को जीतने के प्रयास किए हैं। हमारी यात्रा स्व पर विजय और आंतरिक जगत की है। दुनियाभर में आध्यात्मिक संदेश से ही विश्व शांति की संकल्पना साकार हो सकेगी। सम्मेलन का आयोजन विश्व शांति का अग्रदूत भारत विषय पर किया गया था। इसमें विश्व के कई देशों से पांच हजार से अधिक लोकतंत्र के चारों स्तंभ कार्यपालिका, न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और मीडिया के दिग्गजों ने भाग लिया।

शांति के सागर, सुखदाता परमात्मा के घर में सभी भाई-बहनों का स्वागत है। स्वर्णिम भारत की एक झलक देखने के लिए आज पूरा विश्व आतुर है। हम सभी एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन हैं। इस स्मृति को बार-बार याद करने से आत्मा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करती है। सभी को खुशी बांटते रहें, स्नेह देते रहें। ● **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

### हमारी संस्कृति कभी दुनिया को जीतने की नहीं, स्व की जीत की रही है: त्रिवेदी

**भाजपा प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी** ने कहा कि हमारी संस्कृति कभी दुनिया को जीतने की रही ही नहीं, हमें तो वेदों-पुराणों में यही सिखाया गया कि जीतना है तो खुद को जीतो। हमारा सारा ज्ञान ही स्व का है। सारा अनुसंधान ही अंतर खोजने का है। जितनी भी चीजें हैं जो जीवन को बदल सकती हैं, वह अंदर खोने पर ही मिलती हैं। जब तक आत्मा के केंद्र पर नहीं जाएंगे, ज्ञान मिल नहीं सकता है। हमारे यहां कहा जाता है कि ज्ञान प्राप्त करना है तो ध्यान लगाकर बैठो। यह अमृतकाल की शुरुआत है, हम जगतगुरु बनने के लिए उठ रहे हैं।

यदि मनुष्य के ऊपर समाज के नियम-मर्यादा का बंधन नहीं हो तो 99 फीसदी मनुष्य का जीवन मूल्यों के विपरीत हो। हमने दुनिया में चाइना, ब्रिटेन, रुस, अमेरिका की क्रांति सुनी है, सिर्फ भारत में क्रांति नहीं सुनी है। क्योंकि क्रांति वहां होती है जहां सबकुछ बाहर पाने की इच्छा हो। परंतु जहां अंदर खोजने का प्रयास होता है वहां संक्रांति होती है। इसलिए इस देश में क्रांति नहीं होती है, संक्रांति आती है। यही कारण है कि एक समय हम दुनिया के सबसे ताकतवर देश होते हुए भी कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है। ब्रह्माकुमारीज़ में चेतना के उन्नयन की साधना में साधक जुटे हैं। यह चेतना के विकास का अनुसंधान है। यह अनुभूति का स्थान है। हम जितना अंदर जाएंगी, अनुसंधान करेंगे तभी बदलाव होगा।

### भारत ने ही दुनिया को सभ्यता-संस्कृति और शांति दी है: विदेश राज्यमंत्री लेखी

विदेश और संस्कृति राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि हमारे समाज की प्रार्थना और सोच ही सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया: की रही है। जहां सब सुखी रहें, सब स्वस्थ रहें। भारत ने ही दुनिया को सभ्यता- संस्कृति और शांति दी है। जिसके विचारों, मन और भाव में सुख नहीं है, वह दुनिया में क्या सुख बांटेगा। सुख पाने के लिए मन-मस्तिष्क का सही होना जरूरी है। राजयोग से हमारे मन-विचार सही होते हैं। राजयोग मन को, विचारों को सही करने का एक रास्ता है। सबकुछ व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में घट रहा है, इसलिए मन-मस्तिष्क का सही होना जरूरी है।

शांति के लिए राजयोग एक हिस्सा है। समाज में व्याप्त बुराइयां व्यक्ति के दिमाग की उपज हैं। रक्षा, सुरक्षा, चिकित्सा जो भी शब्द शक्ति से भरपूर हैं वह कहीं न कहीं नारी शक्ति से जुड़े हैं। हमारी मूल सभ्यता-संस्कृति शांति की रही है। चारों ओर शांति होगी, सबका भला होगा तो उसमें ही हमारा सुख और शांति है। उन्होंने मीडिया से आह्वान किया कि जब बुराई दिखाना जरूरी है तो जो लोग समाज में भला काम कर रहे हैं वह दिखाना भी जरूरी है, ताकि लोग अच्छे कार्य से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ सकें। हमारे वेदों में भी महिलाओं को समाज की ऋचाओं को लिखने का कार्य, गुरु होने का उल्लेख किया है। आजादी की लड़ाई में भी साधु-संत, महात्माओं का योगदान रहा है। देश को सही राह दिखाई और सत्य-अहिंसा का भी मार्ग चुना।

शेष पृष्ठ 2 पर ▸

# सभी संकल्प लें कि ये संदेश समाज में फैलाएंगे: केंद्रीय मंत्री टुडू

ब्रह्माकुमारीज़ ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को एक संदेश दे रही है कि मानव कैसे एक अनुशासित जिंदगी जीएं। यदि जीवन में अनुशासन होगा तो समाज में भी अनुशासन होगा। आज दवाई के साथ हमें स्वस्थ रहने के लिए योग की भी जरूरत है। दुनियाभर में भारत के नेतृत्व को सराहा जा रहा है। कोरोनाकाल में भारत ने दुनिया में सबसे बेहतर तरीके से मैनेज किया। जब तक लोगों का आपस में प्यार-स्नेह, देशभक्ति की भावना और आध्यात्मिकता नहीं होगी तो सफलता नहीं मिलेगी। यहां से सभी संकल्प लें कि हम समाज में ये संदेश फैलाएंगे।

● **बिश्वेस्वर टुडू,** भाजपा के राष्ट्रीय सचिव और केंद्रीय राज्य मंत्री जनजातीय मामलों और जल शक्ति मंत्रालय, मयूरभंज, उड़ीसा

अहिंसा परमो धर्मः का हमारा संस्कार रहा है। सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः हमारा नारा है। हमारे संस्कारों में मानवमात्र के कल्याण का भाव रहा है। इसी उद्देश्य को लेकर ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें देश के कोने-कोने में इस मिशन को चला रहे हैं। यहां की शांति, सुंदरता और सफाई अद्भुत है। संस्कार होते हैं सतकर्मों का प्रतिफल, हम कार्य ठीक करें, सही दिशा में करें तो सब ठीक हो जाएगा। मनुष्य में विद्या होती है। अच्छे संस्कारों का व्यक्ति उसे दान करेगा और संस्कारहीन उस विद्या को लेकर विवाद करेगा। यहां मैंने जाना कि आत्मा ही शरीर की मालिक है और मन-बुद्धि-संस्कार उसकी तीन शक्तियां हैं।

● **ओम प्रकाश यादव**
सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री, हरियाणा सरकार

मैं विपक्ष का नेता होने के पहले एक ब्रह्माकुमार हूं। मैं इस संस्था से दस साल से जुड़ा हूं। कल परमात्मा ने मुरली में कहा था कि जो तूफा को भी तोहफा समझता है, वही जीवन में आगे बढ़ता है। जिसमें जोश, सोच, होश है वह युवा है। जो अनीति से लड़ता है, जो राष्ट्र के बलिदान में स्थान रखता है जो कुछ करके दिखाता है वह युवा है। ब्रह्माकुमारी संस्थान में इन सब बातों की शिक्षा दी जाती है। मैं ब्रह्माकुमारी से जुड़ने के पहले जिस समय सोता था आज मैं उस समय 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठता हूं। ये संस्था संस्कार देने का कार्य कर रही है।

● **अंबादास दानवे**
नेता प्रतिपक्ष, महाराष्ट्र विधान परिषद

## भारत की आंतरिक विशेषता और गुण हैं शांति

जब हम मूल के अधिनायक, लीडर जैसे विषयों की ओर देखते हैं तो भारत से बेहतर उदाहरण कुछ नहीं है। भारत में कई सदियों से ज्ञान प्रथा हिस्सा रही है। हम दस हजार वर्षों के इतिहास द्वारा ज्ञान के लंबे गलियारों से गुजरे हैं। मुझे विश्वास है कि हमारा देश अभी भी विश्वगुरु के मुकाम पर कायम रहेगा। क्योंकि जब हम आसपास देखते हैं तो विश्वभर में समाधान केंद्र के तौर पर भारत पर ही नजर होती है। शांति भारत की आंतरिक विशेषता और गुण है जो कि हम विश्व को सिखा रहे हैं। शांति ने ही हमें विशेषता के रूप में आगे बढ़ाया है। ब्रह्माकुमारीज के प्रयास बहुत ही सराहनीय हैं।

● **प्रो. सुनैना सिंह,**
कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार

ब्रह्माकुमारीज ने सोलार पॉवर से भोजन का यहां जो प्रयोग किया है उसे राज्य सरकारें फॉलो करते हुए अपने-अपने राज्यों में लागू करें तो इससे बहुत ऊर्जा की बचत होगी। वर्ष 1937 में दादा लेखराज (ब्रह्मा बाबा) ने कितनी बड़ी सोच के साथ इस संस्था की नींव रखी होगी। आज हमारी सरकारें बेटी बचाओ और महिला सशक्तिकरण का संदेश दे रही हैं उसकी नींव तो दादा लेखराज ने 1937 में ही रख दी थी।

● **यंशवर्द्धन सिंह बहादुर,** बूंदी के 26वें महाराजा, राजस्थान

शांति विश्व की जरूरत है। सुख-शांति मानव की पहली शर्त है। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो शांति की बात करता है। महिलाएं और युवा परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

● **सुश्री फांगनोन कोन्याक**
राज्यसभा सांसद, नागालैंड

हम पहले विश्वगुरु थे, क्योंकि हमारी शिक्षा का मॉडल गुरु-शिष्य परंपरा का था। लेकिन बाद में हम मेकाले की शिक्षा पर चले गए और आज फिर हम गुरु-शिष्य की परंपरा को अपना रहे हैं। एक दिन फिर हम विश्वगुरु के पद पर होंगे।

● **सुजीत कुमार,** सांसद, राज्यसभा, ओड़िशा

हम किसी भी धर्म-जाति-संप्रदाय के हों लेकिन सुप्रीम पॉवर एक है। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा वर्तमान समय के हिसाब से बहुत जरूरी है। युवाओं के कंधे पर ही भविष्य की जिम्मेदारी है। युवाओं को ठीक रास्ते पर लाकर, उन्हें आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हमारी ही है।

● **मोहम्मद मोकिम,** विधायक और उद्योगपति, ओडिशा

ब्रह्माकुमारीज़ में साइंस और स्प्रीचुऑलिटी का बेलेंस देखने को मिलता है। साइंस भौतिकता को बढ़ावा देती है तो आध्यात्मिकता आंतरिक संरचना, अंतर्जगत को जानने की गहराइयों में ले जाती है। हम जितना आध्यात्म को जानते जाएंगे, उतना खुद के करीब होते जाएंगे।

● **डॉ. वसंत के. थिमपुरा,**
संस्थापक, कृषि ज्ञान विज्ञान वेदिक

आत्मा-परमात्मा को जाने बिना आध्यात्मिक शक्तियों का संयोजन करना मुमकिन नहीं है। शक्ति स्वरूपा ब्रह्माकुमारी बहनों ने शून्य से यात्रा शुरू की थी और आज शिखर पर हैं। यह सब आज इनकी त्याग-तपस्या और कड़ी मेहनत का परिणाम है। हम बचपन से लेकर मृत्यु तक भारत मां की गोदी में पलते-बढ़ते और इसी मिट्टी में समां जाते हैं। जब भारत माता का जयकारा बोला जाता है तो सभी 12 ज्योतिर्लिंग, सभी धर्म स्थल, सभी देवी-देवता, 51 शक्तिपीठ और पवित्र नदियों की जय हो जाती है। विज्ञान और आध्यात्म में संतुलन से ही हम विश्वगुरु फिर से बन पाएंगे।

● **दुर्गादास उइके,** लोकसभा सांसद, बैतूल, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान देश और समाज हित में बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। यहां से लोगों को सकारात्मक सोच से विश्व परिवर्तन की शिक्षा दी जा रही है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण के लिए भी बहुत कार्य किए जा रहे हैं। मैं यहां आकर बहुत प्रसन्न हूं। भारत पूरे विश्व में शांति लाने के लिए पूरी तरह से प्रयासरत है। इसमें हम एक दिन जरूर सफल होंगे।

● **मैसूर के महाराजा एचएच महिषापुर दिशा यदुवीर कृष्णादत्ता**

चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इंस्टीट्यूट है। यहां दो दिन में अनुभव किया कि जिसको देखो वही शांति की बात कर रहा है। परमात्मा की बात कर रहा है। यहां आकर मुझे लगा कि मैं किसी दूसरी दुनिया में आ गया हूं।

● **डॉ. देबाशीष मित्रा,** अध्यक्ष, द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

हमारी हजारों साल पुरानी सबसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति रही है। आप सभी जब इस पवित्र परिसर से जाएं तो शांति का संदेश लेकर जाएं। 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें विश्व को योग और आध्यात्म का संदेश देने के लिए दिन-रात सेवा में जुटी हैं, जितना हो सके इन बहनों का सहयोग करें।

● **धर्मबीर सिंह,**
लोकसभा सांसद, भिवानी, महेंद्रगढ़

यहां आकर मैंने सीखा है कि एक खिलाड़ी के साथ देश का युवा होने के नाते अपना सहयोग दे पाऊं। साथ ही देश की उन्नति में अपना सहयोग कर सकूं। मैंने जीवन में सीख ली है कि शांति, आध्यात्म और योग के सहयोग से हम बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यहां की साफ-सफाई, व्यवस्था, संचालन सबकुछ सीखने लायक है। यहां से समाज को नई विचारधारा दी जा रही है जो आज जरूरी है।

● **तरूण भिलन,** खिलाड़ी, इंडियन बैडमिंटन टीम।

दादी जानकी जी डायनॉमिक पर्सनॉलिटी थीं। वह 104 साल की उम्र में भी इतने बड़े संगठन को संभाल रहीं थीं, यह आध्यात्मिकता की शक्ति से ही संभव है। आध्यात्म में बहुत बड़ी पॉवर है। आध्यात्म से ही विश्व में शांति आएगी। आज शांति विश्व की जरूरत है।

● **रुबिन गैची**
भारत में माल्टा के उच्चायुक्त

यहां मेडिटेशन में बताया गया कि कैसे सोच से कर्म और कर्म से संस्कार बनते हैं। आज युवा वेस्टर्न कल्चर की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। हमें युवाओं को अच्छे संस्कार देंगे होंगे, ताकि वह भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ा सकें। इस बारे में ब्रह्माकुमारी बहनों कार्य कर रही हैं। परमपिता परमेश्वर एक ही हैं।

● **जोगेश सिंह सोंधी,** आरडीएसओ, पूर्व महानिदेशक, एनएचएआई, आईआरएसई के वरिष्ठ सलाहकार

# लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की आवाज

विश्व में केवल भारत और भारतीय संस्कृति ही ऐसी है जो विश्व शांति ला सकती है। हम सबका सम्मान करते हैं, यही हमारी खूबी है। हमारी बात एक दिन जरूर विश्व में सुनी जाएगी और विश्व में शांति और भाईचारे का माहौल होगा। एक दिन जरूर ऐसा आएगा कि भारत विश्वगुरु बनेगा। मैं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का बेटा हूं और हमेशा अपने सीने पर तिरंगा लगाकर रखता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ महिलाओं द्वारा संचालित महिलाओं की संस्था है। यदि हमारे घरों की बागडोर भी बहनों के हाथ में हो तो कितना सुंदर संचालन हो सकता है, यह सीखना है तो ब्रह्माकुमारीज़ सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है। ब्रह्माकुमारी बहनों की तरह चमकें और अपने मन को उदार बनाएं।

■ **विजय दर्डा,** चेयरमेन, लोकमत ग्रुप, मुंबई

एक पत्रकार के दौर पर जब हम सरकार को जवाबदेह मानते हैं तो हमें आनंद आता है। हमारे पेशे में सबसे बुरी खबर हमारे लिए सबसे अच्छी खबर होती है। सबसे बुरा विषय सबसे अच्छा होता है। पूरी रात हम इन खबरों का पोस्टमार्डम करते हैं। सुबह जब आप उन खबरों को पढ़ते हैं और आपके चेहरों की भाव-भंगिमाएं, बैचेनी, खुशी ही हमारी रातभर की मेहनत तय करती है। जब हम इंसानी जहर को खबर के माध्यम से सबके सामने लाते हैं और जब पाठकों का गुस्सा और बैचेनी के बाद वह अपना बयान वापस लेता है तो हमें खुशी होती है। हम आपको सच दिखा पाएं यही हमारे लिए शांति के मायने होते हैं। हमारे न्यूज़रूम निगेटेविटी से भरे होते हैं। वहां मौत की नंबरों के हिसाब से खबर का वजन तय होता हैं। हम लोग रात भर इस उम्मीद से मेहनत करते हैं कि सुबह जब पाठक अखबार पढ़ेगा तो उन्हें कैसा सुकून मिलेगा।

■ **एलपी पंत,** नेशनल एडिटर, दैनिक भास्कर, जयपुर

मुझे आज यहां आकर महसूस हो रहा है कि मैं यहां पहले क्यों नहीं आया। यहां आकर अद्भुत सुकून और शांति महसूस की। आज हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हम जब आजादी का शतक पूरा करेंगे तो निश्चित तौर पर विश्व गुरु के तौर पर होंगे। आजादी के 75 साल में हमने कभी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया है। यहाँ आकर मैंने जाना है कि जरूरी नहीं है कि दुनिया में बदलाव लाने के लिए हमें घरबार छोड़ने की जरूरत है। हम घर में रहते हुए भी विश्व शांति के कार्य में अपना सहयोग कर सकते हैं।

■ **अनिल सिंघवी,** मैनेजिंग एडिटर, जी बिजनेस, दिल्ली

दुनिया में आबू आध्यात्म और शांति का ग्लोबल कैपिटल है। वर्ष 1937 में जो बीच ब्रह्मा बाबा ने बोया था आज वह वटवृक्ष बन चुका है। 15 साल पहले एक खबर की तलाश में इस संस्थान में आया था। तब से मैं यहां नियमित परिवार के साथ आता हूं। यहां का ज्ञान लेने के बाद मेरी सोच और दुनिया को देखने का नजरिया बदला है। ब्रह्माकुमारीज़ के सेंटर लाइट हाउस और देवतुल्य हैं। संस्था द्वारा परिवार और समाज को सुंदर बनाने का कार्य किया जा रहा है। कोरोना के दौर में भी बहनों ने सोशल मीडिया के जरिए लोगों को प्रेरणा और संबल देने का कार्य किया। सरकारों को संस्थान के साथ मिलकर बच्चों को संस्कारवान बनाने का कार्य करने की जरूरत है।

■ **राजेश असनानी,** असिस्टेंट एडिटर, न्यू इंडियन एक्सप्रेस, जयपुर

देवो शांति का जो श्लोक है ये गवाही देता है कि भारत दुनिया को अतीत से आज तक शांति देता रहा है। भारत कई खंडों और मोड़ से गुजरा है। यहां तक कि कई आक्रांता आए लेकिन यहां की मिट्टी का ही कमाल है कि उन्हें यहां आकर शांति और सम्मान ही मिला है। भारत ने कभी शांति का दामन नहीं छोड़ा है। भारत का ये पारंपरिक विचार भारत के हर नागरिकों में रचा बसा है। ये बात विदेशियों ने भी कही है भारत जैसी शांति कहीं और नहीं मिल सकती है। भारत ने दुनिया को गले लगाया है। आदिकाल से ही वसुधैव कुटुम्बकम का नारा दिया है। हमारे यहां अतिथि देवो भवः की परंपरा है। हमारे आचार-विचार में शांति की बात होती है। हजारों कालखण्डों के बाद शांति जैसे शब्दों का सृजन होता है। यहां सभी ज्ञान का भंडार हैं।

■ **मनीष वाजपेयी,** कंसल्टेंट एडिटर, दूरदर्शन, दिल्ली

## इन्होंने भी व्यक्त किए विचार...

❝ नेपाल के बागमती प्रांत के सांसद मुनु सिगडेल ने कहा कि आज पूरा दुनिया अशांत है। ब्रह्माकुमारीज शांति स्थापित करने जा रही है। इस संस्थान की निःस्वार्थ सेवा से मैं बहुत प्रभावित हूं। आप सबका जीवन सीखने और धारण करने योग्य है।

❝ न्यू लाइट संस्था के फाउंडर उरमी बसु ने कहा कि शांतिवन की शांति, यहां के राजयोगी-राजयोगिनी भाई-बहनों ने मुझे जीवन में एक नई दिशा देने का काम किया है। हमारे इस छोटे से जीवन में हम स्वार्थ बस सोच लेते हैं कि जो नई दुनिया होगी वह सिर्फ मेरे लिए होगी। लेकिन भगवान तो हर एक के लिए सोच रहा है। जब तक हम लालच और मेरे पन के भाव से ऊपर नहीं उठेंगे तब तक हम ईश्वर के कर्मचारी नहीं बन सकते।

❝ शिवशक्ति समूह के संस्थापक जीवी अंजनेयुलु ने कहा कि खुशी, शांति हमारी पहली जरूरत है। दुनिया में शांति सिर्फ भारत ही ला सकता है। भारत ही वह पुण्य और महान भूमि है जिसकी संस्कृति महान संस्कृति है। आध्यात्म और आत्मिक ज्ञान से ही विश्व शांति आएगी।

❝ पुणे से आए जनसेवा फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. विनोद गजानन शाह ने कहा कि हमारे संगठन की ओर से 70 हजार लोगों की सर्जरी की गई है। ग्रामीण क्षेत्र में नर्सिंग, केयरिंग के लिए कार्य किया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज की सारी व्यवस्थाएं अद्भुत हैं।

❝ गुजरात से आए श्रीबिदा सर्वोदय ट्रस्ट के अध्यक्ष विजय छेड़ा ने कहा कि गुजरात में आए भूकंप में हमारी हॉस्पिटल ने छह माह तक फ्री इलाज किया। 20 साल से हम लोग कच्छ में नेचरोपैथी सेंटर चला रहे हैं। अब तक हमने 40 हजार बच्चों का इलाज किया है। ब्रह्माकुमारी बहनों से आह्वान है कि आप हमारे सेंटर में बच्चों को संस्कार देने का कार्य करें।

❝ पुणे के पीपुल्स मूवमेंट फॉर ग्रीन इंडिया के अध्यक्ष रवींद्र धारिया ने कहा कि हमारी धरती ने हमेशा हमें देना सिखाया है। यही हमारी संस्कृति की विशेषता और खूबी है।

❝ हेटेरो ग्रुप के चैयरमेन डॉ. बंदी पार्थसारथी रेड्डी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान लेने के बाद मेरी विचारधारा, कार्यशैली और जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। साथ ही अपनी कंपनी को नई ऊंचाइयों पर ले जा सका।

## जब रात ढाई बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का फोन आया...

शहीद भगतसिंह सेवादल के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. जितेंद्र सिंह शुंटी ने कहा कि मैं 25 साल से ऐसे शवों का अंतिम संस्कार कर रहा हूं जिनका कोई नहीं है। अब तक 4200 से ज्यादा शवों का अंतिम संस्कार कर चुका हूं। कोरोना काल में जब कोई शवों को हाथ लगाने के लिए तैयार नहीं था, खून रिश्तों तक ने मुंह मोड़ लिया था, तब हमने उनका अंतिम संस्कार किया। मेरे इस कार्य में लंदन से पढ़कर आए बेटा और पत्नी ने भी पूरा सहयोग दिया। जब छोटे-छोटे बच्चे पिता की लाश लेकर आते थे तो ऐसे दृश्य देखकर मन व्यथित हो जाता था। रोडपति हो या करोड़पति सबमें मौत का डर देखा। 26 अप्रैल की रात ढाई बजे आता है और जब मैं फोन रिसीव करता हूं तो वहां से आवाज आती है मैं नरेंद्र मोदी बोल रहा हूं। प्रधानमंत्री का रात को फोन करके हौसला बढ़ाना, आज भी याद है। अगले ही दिन उपराष्ट्रपति जी का फोन आया और उन्होंने कहा कि सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन मैं बाज तुड़ाऊं तबे गोविंद सिंह नाम कहाऊं। इसके बाद मुझे पद्मश्री के लिए चुना गया। मेरा यही संदेश है कि जब आप यहां से जाएं तो आपस में शांति से रहें।

## इनका भी किया गया सम्मान...

विजयनगरम के लोकसभा सांसद बेलाना चंद्रशेखर, आंध्रप्रदेश के अराकु से लोकसभा सांसद सुश्री गोड्डेती माधवी, माई एफएम के सीईओ राहुल जे नामजोशी, दक्षिणपंथी मीडिया थिंक टैंक के डॉ. सुव्रोकमल दत्ता, नोएडा से जी मीडिया की एचआर हैड सुश्री रुचिरा श्रीवास्तव, जी हिंदुस्तान के प्रबंध संपादक शमशेर सिंह, उदयपुर से प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अतुलभ बाजपेयी, जेम एंड ज्वैलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के वाइस चेयरमैन किरीट भंसाली, अहिंसाधाम फाउंडेशन मुंबई के महेंद्र सांगोई, उत्तराखंड गंगोत्री से आए विधायक सुरेश चौहान, बांसवाड़ा से लोकसभा सांसद मानशंकर निनामा का माला, मुकुट और शॉल पहनाकर सम्मान किया गया।

पहली बार आकर मुझे ब्रह्माकुमारीज में नई दुनिया का एहसास हो रहा है। मैं हैंडलूम थप्पा ब्लॉक पेंटिंग का काम करता हूं। हमारी इस काम में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 30 से 35 हजार लोग जुड़े हुए हैं। मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान से भी गुजारिश करूंगा कि हमारे लिए कोई सेवा हो तो आप हमें जब भी बुलाएंगे मैं जरूर आऊंगा। अगर कपड़ा उद्योग को और प्रोत्साहन मिलता है तो हमारे देश की बेरोजगारी खत्म होगी।

● **पद्मश्री रामकिशोर छिपा,** रिनोव्ड क्रॉफ्टमैन, अहमदाबाद

किसी को सलाह देना आसान है लेकिन खुशी देना कठिन। ब्रह्माकुमारी संस्थान खुशी और ज्ञान बहुत सहजता से सबको दे रही है। मात्र ढाई महीने पहले मैंने राजयोग अभ्यास शुरू किया है। पिछले ढाई महीने से मुझे गुस्सा नहीं आया। मेरे लिए यह बड़ी अचीवमेंट है। लेकिन जिनका जीवन क्रोध से तबाह है, उनसे जरा अनुभव लीजिए की क्रोध पर विजय पाना कितनी बड़ी अचीवमेंट है। ● **तुषार प्रभुजी,** एडिटर, टाइम्स ऑफ इंडिया, अहमदाबाद

इस सम्मेलन का यही लक्ष्य है कि हम सभी एक परमपिता परमात्मा की संतान आपस में भाई-भाई हैं। हम एक-दूसरे को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें और भाईचारे से रहें तो हमारा जो संदेश है विश्व शांति तो वह जरूर होगी। आध्यात्म ही एकमात्र ऐसा रास्ता है जिससे समूचे विश्व को एकता के सूत्र में बांधा जा सकता है।

● **बीके निर्वैर,** महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, आबू रोड

शिव शक्तियां, बालब्रह्मचारिणी ये पावन गंगाएं ब्रह्माकुमारियां आध्यात्म और राजयोग के माध्यम से विश्व शांति के लिए अपना घरबार छोड़कर दिन-रात सेवा में जुटीं हैं। हम सबके परमपिता एक परमात्मा हैं। इस नाते से विश्व की सभी मनुष्यात्माएं आपस में भाई-भाई हैं।

● **बीके बृजमोहन,** अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, आबू रोड

वैश्विक शिखर समेलन में देश-विदेश से आए सभी महानुभावों का हृदय की गहराइयों से स्वागत है। हमारा प्रयास है कि ऐसे सम्मेलनों के माध्यम से आमजन से लेकर खास वर्ग को एक मंच पर लाकर उन्हें आध्यात्म और योग का ज्ञान देना। वर्तमान परिवेश के हिसाब से आज योग बहुत जरूरी है।

● **बीके मृत्युंजय,** कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, आबू रोड

देश-विदेश से आए कलाकारों ने बिखेरे संस्कृति के रंग...

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर

# वैश्विक शिखर सम्मेलन: सुरों की जुगलबंदी से कला की साधना...

# कल्पतरुह अभियान: रिकार्ड पौधारोपण पर किया सम्मान

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज द्वारा चलाए गए 75 दिवसीय कल्पतरुह अभियान में रिकार्ड पौधारोपण करने पर ब्रह्माकुमारी बहनों का शांतिवन में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में सम्मान किया गया। अभियान के तहत भोपाल जोन के रीवा सेवाकेंद्र द्वारा प्रभारी बीके निर्मला बहन के नेतृत्व में 4.5 लाख पौधे के साथ पूरे देश में प्रथम स्थान पर रहीं। वहीं छतरपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा बहन तीन लाख पौधे के साथ द्वितीय स्थान पर रहीं। उत्तराखंड के चमोली सेवाकेंद्र के बीके मेहरचंद द्वारा ढाई लाख पौधे लगाए गए। बैतूल सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू बहन द्वारा एक लाख पौधे लगाए गए। उत्कृष्ट सेवाएं करने पर कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने सभी बहनों को प्रशस्ति पत्र, शॉल से सम्मान किया।

# मानद उपाधि प्रदान की

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी और महासचिव बीके निर्वैर को मानवीय तथा समाज में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए मणिपुर नेशनल यूनिवर्सिटी ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। यह डिग्री मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. हरीकुमार ने वैश्विक शिखर सम्मेलन में प्रदान की। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए यह गौरव की बात है कि यह डॉक्टरेट की उपाधि ऐसे व्यक्तित्व को प्रदान कर रहे हैं जो वाकई इसका हकदार है। यहां आकर ऐसा लग रहा है जैसे हम विशेष स्थान पर आ गए हैं। राजयोग ध्यान से मनुष्य का जीवन बदल जाता है।

# दो हजार श्रमिकों को सम्मान स्वरूप प्रदान की सौगात

- दादी प्रकाशमणि की 15वीं पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन
- कार्यक्रम के समापन पर ब्रह्माभोजन का किया गया आयोजन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 15वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में शांतिवन में श्रमिक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज के अलग-अलग परिसरों में अपनी सेवाएं देने वाले दो हजार से अधिक श्रमिकों को सम्मान स्वरूप सौगात प्रदान की गई। साथ ही सभी का मुख मीठा कराते हुए सभी के लिए ब्रह्माभोजन का आयोजन किया गया। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी बहन ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी इस ईश्वरीय यज्ञ में कार्य करने वाले सभी श्रमिकों को श्रमिक न मानकर अपने भाई-बहन के समान मानती थीं। उनकी सभी के प्रति सदा समभाव रहता था। वह उन्हें ईश्वरीय सेवाधारी मानती थीं। साथ ही उनके सुख-दुःख में हर पल साथ रहती थीं। दादी का प्रयास रहता था कि सभी को जो यहां अपनी सेवाएं दे रहे हैं उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो। इसलिए हर वर्ष दादीजी की पुण्यतिथि पर श्रमिकों का सम्मान समारोह आयोजित किया जाता है।

# सभी के लिए अपनी इनर टेक्नोलॉजी का नॉलेज जरूरी: मंजूनाथ

- आईटी विंग की ओर से इनर टेक्नोलॉजी नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित
- देशभर से आईटी से जुड़े प्रोफेशनल्स, एक्सपर्ट और इंजीनियर पहुंचे

कॉन्फ्रेंस में मंच पर उपस्थित अतिथिगण।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान (निप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के मनमोहिनीवन परिसर में आईटी विंग की ओर से इनर टेक्नोलॉजी नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। इसमें देशभर से 400 से अधिक आईटी प्रोफेशनल्स, एक्सपर्ट और इंजीनियर्स ने भाग लिया। टीसीएस में बिजनेस एंड प्रोडक्ट के हैड मंजूनाथ ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। इनर टेक्नोलॉजी पावरफुल हो गई। मेरा सोचने का नजरिया बदल गया। हम अपनी बॉडी के बारे में तो बहुत जानकारी रखते हैं लेकिन इनर टेक्नोलॉजी के बारे में लापरवाह होते हैं जो जीवन का आधार है। जीवन में यदि खुश रहना है, शांति से रहना है तो माइंड को, विचारों को गहराई से समझना जरूरी है। राजयोग से जीवन खुशमय बन जाता है। एलकामीनो टेक्नोलॉजीस की प्रेसीडेंट चेतना मोहन, यूथ विंग के मुख्यालय संयोजक बीके आत्म प्रकाश, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके अरुणा लाडवा, मुख्यालय संयोजक बीके यशवंत ने भी विचार व्यक्त किए। स्वागत गीत अंबरनाथ मुंबई के कलाकारों ने पेश किया। ब्लूबेरी सेमीकन्डक्ट के डायरेक्टर बीके भारते ने एजेंडा पेश किया। दिल्ली की बीके विधात्री ने संस्थान द्वारा आईटी के क्षेत्र में की जा रही सेवाओं की जानकारी दी।

- खेल प्रभाग की नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित

# स्पोर्ट्समैन होता है कर्मयोगी

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में खेल प्रभाग की ओर से चार दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 400 से अधिक खिलाड़ियों, खेल संगठन से जुड़े सदस्य, पदाधिकारी आदि ने भाग लिया। चार दिन तक चले मंथन में खेल से जुड़े जानीं-मानीं शख्सियतों ने यह माना की खिलाड़ियों को फिजिकल के साथ मेंटर हेल्दी होना जरूरी है। मेडिटेशन से खिलाड़ी की मेंटर हेल्थ डवलप होती है। शुभारंभ सत्र में दिल्ली से आए इंदिरा गांधी स्टेडियम में बॉस्केटवॉल कोच अमन शर्मा, जयपुर से पधारे राज्य स्पोर्ट्स काउंसिल के पीआओ एवं इंडियन हैंडबॉल टीम के कप्तान रहे तेजराज सिंह ने भी भाग लिया। दिल्ली से पधारे इंडिया प्रीमियर एकेडमी ऑफ स्कूल साइंस एंड फिजिकल एजुकेशन के अध्यक्ष डॉ. गुरुदीप सिंह ने कहा कि खिलाड़ियों के लिए मेडिटेशन सबसे ज्यादा जरूरी है। खेल एक साधना है। जैसे एक योगी साधना करता है वैसे ही एक खिलाड़ी को अपने लक्ष्य के प्रति मेडिटेशन के साथ मेंटर और फिजिकल साधना करना होगी, तभी सफलता मिलती है। खिलाड़ी एक कर्मयोगी है। फरीदाबाद से पधारे अग्रवाल कॉलेज के प्रिंसिपल और दस अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को तैयार करने वाले अवार्ड प्राप्त डॉ. कृष्णकांत गुप्ता ने कहा कि राजयोग को सहज योग भी कहते हैं। दुनिया में जितने भी योग सिखाए जाते हैं वहां आपको आंख बंद करके योग करना सिखाया जाता है लेकिन ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आंख खोलकर राजयोग मेडिटेशन करना सिखाया जाता है। हमारे कॉलेज से पढ़कर खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाई है, इसमें राजयोग का बहुत बढ़ा योगदान है। बांग्लादेश से पधारे क्रिकेट कोच आशिकर रहमान मजूमदार ने कहा कि यहां राजयोग मेडिटेशन के बारे में गहराई से जानने का मौका मिला। यहां आकर मैंने राजयोग मेडिटेशन को गहराई से सीखा है। सेलिब्रिटी कंसल्टेंट खिलाड़ी राजाराम, प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. जगबीर, करनाल से पधारीं बीके प्रेम, बीके जयश्री, बीके अजय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

**डॉक्टर्स मीट** मेडिकल विंग की 46वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित

# सबकुछ चला जाए खुशी न जाए: बीके शिवानी दीदी

अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी संबोधित करते हुए। कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ करते विंग के पदाधिकारी व अतिथिगण।

✓ सेल्फ केयर एंड सेल्फ कम्पेशन थीम पर कॉन्फ्रेंस आयोजित

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान (निप्र)। अब तक हम शरीर की देखभाल तो करते आ रहे हैं लेकिन मन की देखभाल नहीं की। इससे बीमारियां कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही हैं। जैसे मेडिकल की एक भाषा होती है, वैसे ही स्प्रीचुअल भी एक भाषा है। इसमें हर एक शब्द हाई एनर्जी का होता है। जिससे हमारे माइंड को पॉजीटिव एनर्जी मिलती है। जब आप हॉस्पिटल में मरीजों को देखने जाएं तो उन्हें हाई एनर्जी वर्ड ही यूज करें। आप अपने हर पेशेंट की सोच को बदल सकते हैं। जीवन में सबसे जरूरी है कि अपने मन को ठीक रखें। जब हम अपने मन को सदा ठीक रखेंगे तो क्वालिटी ऑफ लाइफ हाई हो जाएगी। उक्त उद्गार अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने देशभर से आए 500 से अधिक डॉक्टर्स को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज के मनमोहिनीवन परिसर में मेडिकल विंग द्वारा 46वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। सेल्फ केयर एंड सेल्फ कम्पेशन थीम पर कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि जीवन में सबकुछ चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। चाहे हमारे सामने मौत ही क्यों न खड़ी हो। जब आप अपने माइंड की हाई एनर्जी के साथ मरीज का इलाज करेंगे तो वह जल्दी रिकवर होंगे। क्योंकि मरीज पर दवा से ज्यादा डॉक्टर के प्रेममय व्यवहार, केयरिंग और हीलिंग पावर से होता है। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, विंग के अध्यक्ष डॉ. अशोक आर मेहता, उपाध्यक्ष डॉ. प्रताप मिड्ढा, सचिव डॉ. बनारसी लाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

## संपादकीय

# दशहरा और दीपावली का मतलब जीवन में खुशहाली की दस्तक

**त्यौहारों के आध्यात्मिक रहस्यों को जानकर उन्हें अपने जीवन में भी करें अंगीकार**

भारत देश में वैसे तो अनेक त्योहार होते हैं, परंतु कुछ त्योहार ऐसे होते हैं जो मनुष्य के मन-मस्तिष्क को कुछ वक्त के लिए खुशियों से भर देते हैं। साथ ही जीवन में कुछ नया करने का संकल्प देते हैं। इसी तरह का पर्व दशहरा और दीपावली है। ये दोनों ही पर्व मनुष्य को साधारण मानव से देवताई की ओर अग्रसर करते हैं। यही कारण है कि भारत देश के लोग पूरी दुनिया में कहीं भी हो परन्तु बड़े ही तन्मयता और उमंग उत्साह से मनाते हैं। रस्म और रीति रिवाजों से भरे इस पर्व में मनुष्य कुछ वक्त के लिए ऊर्जा से भरने का प्रयास करता है। दहशरा अर्थात् अपने अंदर की बुराईयों को समाप्त करना, उसपर विजय पाना है। दीपावली अर्थात् घर और आर्थिक रूप से कार्यव्यवहार को सुव्यस्थित कर नए सिरे से प्रारंभ करना होता है। इस पर्व पर जितने रीति और रस्म अदायगी की जाती है। वह व्यक्ति के उत्थान से जुड़ी होती है। इसलिए हमें इस पर्व को बड़े ही आध्यात्मिक रहस्यों के साथ मनाना चाहिए। यही इन पर्वो का संदेश है। इसलिए परमात्मा का यह संदेश है कि जब भी हम इन पर्वो को मनाएं तो अपने जीवन की उत्कृष्टता के लिए मनाएं। राजयोग ध्यान और इन पर्वो को मनाने के लिए जरूरी है कि परमात्म ज्ञान को जीवन में उतारने का प्रयास करें। तभी सही मायनों में इनकी सार्थकता सिद्ध होगी।

## बोध कथा/जीवन की सीख

# काल चक्र में कलियुग

**इस युग में हर चीज अति की ओर जाती है, इसलिए सभी यहां रामराज्य की कल्पना करते हैं**

समय का पहिया घूमते घूमते काल चक्र के चौथे युग, कलियुग तक आ पहुंचा, जिसे कलह-क्लेश का युग भी कहा गया। शास्त्रों में इसके लिए कथा प्रसिद्ध है कि जब कलियुग आया तो राजा परीक्षित का राज्य चल रहा था। कलियुग के दस्तक देने पर राजा परीक्षित ने पूछा- कौन? कलियुग ने जवाब दिया, मैं कलियुग हूं, थोड़ा सा स्थान आपके राज्य में चाहता हूं। राजा ने इनकार किया कि मेरे राज्य में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है। कलियुग बोला, मेरा समय आ चुका है, अब मुझे आना ही होगा। इसलिए मुझे स्थान दो। तब राजा परीक्षित ने चार स्थान उसे आने के लिए बताए। बोले, आप शराब खानों में, जुआ खानों, में वैश्यालयों में और कसाई खाने में अपना स्थान बना सकते हो। वहीं तक सीमित रहना बाहर मत आना। तब कलियुग बोला मेरा परिवार बहुत बड़ा है, एक और स्थान मुझे दीजिए। राजा परीक्षित बोले ठीक है, पांचवा स्थान स्वर्ण में प्रवेश कर सकते हो। सुनते ही कलियुग ने राजा के सिर पर रखे हुए स्वर्ण मुकुट में प्रवेश कर लिया और उनके दिमाग को घुमाते हुए अपनी लीला शुरू कर दी। आज इसी स्वर्ण में अपना स्थान लेकर वह घर-घर में अपना स्थान बना चुका है और अपने स्वभाव का रंग दिखा रहा है। आज कलियुग में इन्हीं पांच स्थानों पर हर घर में कलह-क्लेश होने लगा है।

संदेश-स्वास्तिका के चित्र का बायां हाथ ऊपर को उठा हुआ इसी बात का प्रतीक है कि कलियुग में अधर्म हर प्रकार से अपनी चरम सीमा को प्राप्त करता है। कलियुग के दौरान अति धर्म भ्रष्ट, अति कर्म भ्रष्ट, अति अत्याचार, अति पापाचार, अति दुराचार यानी हर प्रकार की अति हो जाती है। इसी युग को दूसरे शब्द में रावण राज्य भी कहा जाता है, तभी तो इस युग में सभी राम राज्य के सपने देखते हैं।

मेरी कलम से...

सुधीर मिश्रा
एडिटर, नवभारत टाइम्स, दिल्ली

देश की स्वतंत्रता अखंडता के लिए देश के कई परिवार ने अपना जान-बलिदान दिया...

# आबू में आकर ईश्वर से जुड़े मेरे अपने सवालों के करीब जा रहा हूं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ईश्वर क्या है, कहां है और कैसे महसूस होता है ? यह सवाल हर एक के मन में आता ही है। अपनी बात करूं तो माउंट आबू में ब्रह्माकुमारी आश्रम में मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं शायद इन सवालों के जवाब के करीब जा रहा हूं। बचपन से अब तक घर, गुरुओं और आसपास के वातावरण से मैं पूजा-पाठी आस्तिक बना। ईश्वर के साकार रूप को मन में बसाया और उनकी मूर्तियों व फोटो को पूजा। रोजाना पाठ किए और व्रत उपवास किया। आस्था के साथ-साथ भीतर ही भीतर एक द्वंद हमेशा रहा। क्या ईश्वर के करीब होने का यही रास्ता है या फिर यह हमारे उस स्वार्थ को सिद्ध करने का मार्ग है, जिसमें तरह-तरह की इच्छाएं रखते हैं। क्या हम मांगने और इच्छापूर्ति के लिए पूजा करते हैं। या फिर संकट की घड़ी में एक ताकत के रूप में अपनी आस्था को देखते हैं कि ईश्वर तो मदद करेगा ही। तो क्या यही आध्यात्मिकता है। पूजा-पाठ मेरे लिए बिल्कुल एक रस्म जैसा हो गया जिसे मैं रोज पूरा करता हूं। पर क्या यह सही आध्यात्मिक चेतना जाग्रत करेगा या ईश्वरीय अनुभव देगा। अगर एक हिंदू को ऐसे ईश्वरीय अनुभव होता है तो मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध और यहूदी को कैसे होता होगा? क्या ईश्वर भी अलग अलग है।

ब्रह्माकुमारी संस्था का आध्यात्मिक दर्शन यह है कि ईश्वर एक निराकार चेतना है, शक्तिपुंज है। सभी धर्म और मजहब में जो देवता या महापुरुष हुए हैं, उन्होंने उस चेतना को ध्यान के जरिए महसूस किया और लोगों को तत्वज्ञान दिया। आज हमने जिनके भी मंदिर बनाए हैं, वह हमारी आप तरह के लोग ही थे पर उन्होंने ध्यान की शक्ति से इतना ऊर्जा अर्जित की कि लोग उन्हें ईश्वर का दर्जा दे बैठे जबकि ऐसा है नहीं। जरूरत इस बात की है कि हम उनके बताए रास्ते पर चलें, अच्छे कर्म करें और ध्यान करें। ध्यान मतलब ऐसी एकाग्रता जिसमें आप बाकी सबकुछ भूल जाएं। ध्यान के भी कई रास्ते हैं। एक रास्ता तो आंखों को बंद करके दोनों नेत्रों के बीच एक काल्पनिक ज्योति पुंज पर दृष्टि केंद्रित करना है। मैंने यहां की विद्वान दीदियों को बताया कि मेरे ऐसे कई बार किए गए प्रयास निष्फल रहे और मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया। हां, अपने काम की लगन और छुट्टी के दिन शौकिया खाना बनाने या गाना गाने में कई बार ऐसी अवस्था आई कि मैं बाकी सबकुछ भूल गया। मुझे जवाब मिला कि यह भी ध्यान ही है कि आप अपने कर्म को इतना एकाग्र होकर करते हो। इसे ही कर्मयोग भी कहते हैं। ईश्वरीय अनुभव मुझे तब होते हैं जब मैं किसी परेशान व्यक्ति की दिक्कत कुछ कम कर पाता हूं। किसी रोते हुए व्यक्ति के चेहरे पर लाई गई मुस्कान से जो ऊर्जा मिलती है, उसे अनुभव करके मुझे लगता है यह ईश्वरीय है, मुझे जवाब मिला हां यही ईश्वरीय अनुभव है।

बहरहाल द्वंद बहुत से हैं पर अच्छा यह लग रहा है कि मेरा रास्ता सही दिशा में है, ऐसा यहां आकर और विद्वानों से मिले ज्ञान से महसूस हुआ।

# धर्मात्मा की भव्यता द्वारा देवात्मा का रूपांतरण

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 51

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल
ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आत्मिक उन्नति में क्रमबद्ध पर्याय के प्रति गहन श्रद्धा से जुड़ी आस्था व्यक्तिगत मान्यता में आत्महित के उच्चतम संकल्प एवं विकल्प की तलाश अवश्य ही कर लेती है जिसमें पवित्र स्वरुप की संकल्पबद्धता का सम्पूर्ण निश्चयात्मक पक्ष सदैव विद्यमान रहता है। पवित्र प्रबल पुरुषार्थ द्वारा जीवात्मा अच्छाई से बेहतर की ओर बढ़ जाती है, तब श्रेष्ठतम की स्मृति पूर्ण मनोयोग से उत्कृष्टता की स्थिति को धारण करके महानता के स्वरुप तक पहुँचती है। जिससे धर्मात्मा की भव्यता देवात्मा के रूपांतरण का आधार स्तम्भ बन जाती है।

### आत्मिक भव्यता और अलौकिक प्रभावना

महानता के शिखर पर आत्मगत स्थापित स्वरुप द्वारा सम्पादित क्रियमाण में प्रमुख रूप से सर्व मानव आत्माओं के हित से सम्बद्ध कल्याणकारी कार्यों की पूर्णता हेतु सम्पूर्ण समर्पण की स्थिति का निर्माण किया जाता है। धर्मात्मा की उच्चतम व्यावहारिक अवस्था का अवगाहन करने में सक्षम आत्म तत्व को सदा यह आभास रहता है कि जीवन में आत्मिक आश्रय से की गई मौन साधना द्वारा यह महान स्वरुप में आत्मिक भव्यता की प्राप्ति संभव हुई है। आचरण के आचार्य

की यथार्थता में धर्मगत व्यवहार के सूक्ष्म और वृहद् कर्म के अंतर्गत श्रेष्ठतम परिणाम ही आत्मगत चेतनता में अभिव्यक्त होते हैं और आत्मा की वैभव सम्पन्नता के चरितार्थ एवं फलितार्थ की सात्विक प्रभावना चहुंओर व्याप्त होती रहती है।

### पवित्रतम आभा मंडल एवं आत्मिक समृद्धि

चेतना का परिदृश्य एवं परिवेश जब आत्मिक समृद्धि के अनुभवगत स्वरूप से गतिशील होने की उच्चता में विराजित होते हैं तब आत्मानंद की नैसर्गिक विराटता का दिग्दर्शन सुनिश्चित हो जाता है। आत्म तत्व का गुणानुवाद ही आत्मिक प्राप्ति की भावभूमि है जो परम सत्ता के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की व्यावहारिकता को सर्वगुण सम्पन्नता के महान स्वरुप में प्रकृति प्रदत्त सात्विकता की सुखद अनुभूति कराती रहती है। आध्यात्मिक जीवन में प्रबल पुरुषार्थ की शक्ति से आत्मिक स्वरुप का आभामंडल स्वयं को, स्वयं से ही साक्षात्कार कराने में समर्थ हो जाता है जिसमें साधक और साध्य के मध्य एकाकार भाव की परिणिति का भागीरथ प्रयास समाहित रहता है। योग द्वारा कर्तव्यनिष्ठ अवस्था की ओर प्रस्थान करने से आत्मिक परिष्कार के उच्चतम स्वरुप की महानता प्रकट होती है जो निरंतर आत्मिक आश्रय के अभ्यास से मौन साधना के उपलब्धिपूर्ण परिणाम में परिवर्तित हो जाती है।

### उच्चतम संकल्पबद्धता और प्रबल पुरुषार्थ

जीवन में ज्ञान, योग, धारणा और सेवा की धारणात्मक निरन्तरता साधक, साध्य, साधना एवं साधन की पवित्रता को अखंड स्वरुप में बनाए रखती है, जिससे चेतना को उपराम स्थिति से गतिशील होते हुए कर्मातीत अवस्था की अनुभूति प्राप्त करके अव्यक्त स्वरुप में स्थापित होना सहज हो जाता है। आत्मिक उन्नति में क्रमबद्ध पर्याय के प्रति गहन श्रद्धा से जुड़ी आस्था व्यक्तिगत मान्यता में आत्महित के उच्चतम संकल्प एवं विकल्प की तलाश अवश्य ही कर लेती है। जिसमें पवित्र स्वरुप की संकल्पबद्धता का सम्पूर्ण निश्चयात्मक पक्ष सदैव विद्यमान रहता है। पवित्र प्रबल पुरुषार्थ द्वारा जीवात्मा अच्छाई से बेहतर की ओर बढ़ जाती है, तब श्रेष्ठतम की स्मृति पूर्ण मनोयोग से उत्कृष्टता की स्थिति को धारण करके महानता के स्वरुप तक पहुंचती है, जिससे धर्मात्मा की भव्यता देवात्मा के रूपांतरण का आधार स्तम्भ बन जाती है।

"यदि वास्तव में आप अपना जीवन बदलना चाहते हो तो हर दिन अपनी कमियों को दूर करो।"

-स्वामी विवेकानंद

"दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और सर्वश्रेष्ठ ही आपके पास लौटकर आएगा।"

-महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती

प्रेरणापुंज

**दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)**
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

## बुद्धि को क्लीयर रखना साधना के लिए है जरूरी

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। एक दो से टचिंग आनी चाहिए कि इसका भाव क्या है, इसकी भावना क्या है? तो सच्ची और पावरफुल साधना के लिए हमारे मन का लगाव कहां भी आत्माओं के प्रति नहीं होना चाहिए। कभी-कभी कोई कहते हैं मुझे यह सहयोग देते हैं ना। सहयोग देना तो बहुत अच्छी चीज है लेकिन उस सहयोग से आत्मा का आत्मा से कनेक्शन वा लगाव तो मन का नहीं हो गया, यह भी चेक करना चाहिए कि मेरे मन का झुकाव तो उसमें नहीं हो गया है? तो मन को क्लीयर रखना, बुद्धि को क्लीयर रखना, यह साधना के लिए बहुत जरूरी है।

कर्म अच्छा किया, सहयोग दिया या उसके गुण को देखा यह तो अच्छा कर्म है, परन्तु उसके बन्धन में आ जाना वह कर्मातीत बनने नहीं देगा, क्योंकि बन्धन कोई भी हो वह अपने तरफ खींचता है। अभी देखो तबीयत खराब होती है तो कर्म का बन्धन है न, यह भी पिछला खाता है, लेकिन तबीयत खींचती तो है न और खींचे नहीं इसको कहते हैं - कर्मातीत । लगाव को भी सूक्ष्म रीति से चेक करना चाहिए। क्योंकि लगाव बहुत प्रकार का होता है। हम समझते बहुत राइट है। मेरे मन में तो हमेशा शिवबाबा ही रहता है। लेकिन यदि कोई आत्मा का आधार, कोई आत्मा का गुण, कोई आत्मा का सहयोग... मुझे उस आत्मा की याद दिलाता है तो यह भी कुछ ना कुछ लगाव हुआ। तो बुद्धि के लगाव को चेक करना चाहिए और जब तक यह सूक्ष्म डिफेक्ट होगा तब तक साधना नहीं हो सकती। ऐसे तो हम ज्ञानी, योगी तू आत्मा हैं, योग लगेगा, लेकिन एकाग्रता वाली साधना नहीं होगी। इसीलिए सब प्रकार से एकदम बुद्धि क्लीयर और क्लीन हो, मन एकाग्र हो - इसको कहा जाता है - 'पावरफुल साधना'। अभी जो बाबा चाहता है वह लक्ष्य पक्का रख करके हम उसी लक्षणों को अपने में प्रैक्टिकल में लाएंगे तो बाबा भी हम लोगों को देखकर खुश होगा। बाबा खुश तो रहता ही है लेकिन हमारी खुशी देख के बाबा एक्स्ट्रा खुश होता है- वाह मेरे बच्चे, वाह! विदेही या कर्मातीत अवस्था अर्थात् अशरीरी वा आत्म-अभिमानी अवस्था से ऊंची है। आत्म-अभिमानी स्थिति के लिए आत्मा अपने भान में रहे। आत्म-अभिमानी माना आत्मा मालिक होकर इस शरीर की कर्मेन्द्रियों को चलाए, आत्मा अपने पोजीशन में रहे, मालिक होकर पोजीशन में रहे और सब कर्म भी हों और स्थिति भी अच्छी हो।

### सदा परमात्मा की याद में खोए रहें...

**बाबा** हमेशा कहते हैं - बच्चे, अपने को आत्मा समझकर परमात्मा से योग लगाओ। तो पहली स्टेज है आत्म-अभिमानी बनना। फिर जो आत्म-अभिमानी की स्टेज में रहते रहते, साइलेन्स की ऊँची स्टेज में एक परमात्मा की याद में खोये हुए रहते, आत्मा-परमात्मा का जैसे मिलन हो, समानता हो, जिसमें शरीर का भान एकदम जैसे ना के बराबर हो, उस स्थिति को अशरीरी अवस्था कहेंगे। तो अशरीरी बनना माना मैं और बाबा और कुछ नहीं।

# ईश्वरीय ज्ञान लेने के बाद मेरा नया जन्म हुआ

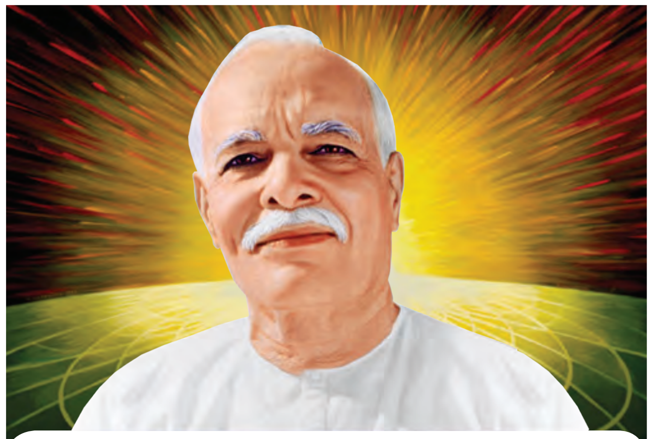

रियल लाइफ

**प्रजापिता ब्रह्मा बाबा**
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

## ईश्वरीय ज्ञान के बाद मिल जाता है नया जन्म, मन हो जाता है संसार से उपराम

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । विवाह होने पर उसे एक प्रकार के माता-पिता से और मायके वालों से दैहिक नाते तोड़कर पति से और ससुराल वालों से नया नाता जोड़ना होता है। कन्या के समय का अलबेला, निश्चिन्त, स्वतन्त्र और पवित्र जीवन समाप्त होकर अब उसका पराधीन, परतन्त्र और चिन्ताओं से भरा, जिम्मेवारी का जीवन प्रारम्भ होता है जिसमें उसे कदम-कदम पर दूसरों की बातें सुननी पड़ती हैं। सहन व त्याग करना पड़ता है। ये दो जन्म तो प्रायः हरेक नारी को इस कलियुगी विकारी संसार में लेने ही पड़ते हैं। परन्तु मैंने दो जन्म और इनके अलावा भी लिए हैं। आप सोचते होंगे कि वह दो जन्म कौन से थे? दो और जन्म जब मैंने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया तब वह मेरा एक नया जन्म था। इसे मैं इसलिए नया जन्म मानती हूँ क्योंकि अब मैंने परमात्मा को पिता के रूप में अपनाया और मीरा की तरह विकारी संसार की रीति-रस्म और लोक लाज छोड़ी।

अब परमपिता परमात्मा जो सद्‌गुरु के रूप में मिले तो सभी दैहिक नातों को भूलकर, उनके मामेकं शरणं व्रज, सर्वधर्मान् परित्याज के मन्त्र के अनुसार उनसे ही आत्मिक नाता जोड़ना पड़ा। मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो ना कोई। इस वचन को निभाने के लिए बुद्धि में एक पतिव्रता नारी की तरह उस निराकार परमात्मा ही को मन में बसाया, बाकी इस संसार के विनाशी नाते तथा कर्मों के खाते भुलाने पड़े।

यह मरना भी कठिन था और जन्म लेना भी कठिन था क्योंकि मैंने पहले जो दो जन्म लिए थे, जिनका मैं पहले वर्णन कर चुकी हूं। उनमें इतना सहन नहीं करना पड़ा और बुद्धि को भी इतना पुरुषार्थ नहीं करना पड़ा जितना कि अलौकिक जन्म अथवा मरजीवा जन्म लेने पर! इस अलौकिक जीवन में वर्तमान कलियुगी विकारी संसार को ही बुद्धि से भुलाने तथा मन से बिसारने का पुरुषार्थ था और सभी लौकिक रिश्तेदारों को देखते हुए भी बुद्धि से उन नातों को याद न करके अविनाशी आत्मिक नाते को याद करना था।

जन्म-जन्मान्तर से आत्मा के जो संस्कार पक्के हो गये थे, उन्हें बिल्कुल मिटाने की मेहनत कोई कम मेहनत न थी बल्कि यह भी एक तरह से मरना और एक तरह से जाना था। पांव फर्श पर होते हुए भी बुद्धि को अर्श पर रखने का यह पुरुषार्थ था। और तो क्या, स्वयं अपनी देह को भूलकर विदेही बन जाने का यह अभ्यास था और कदम-कदम पर, पतियों के भी पति परमेश्वर की जो मत मिले, उस पर ही चलने तथा मर मिटने की आदत मन को डालनी थी।

### मरजीवा जन्म...

पुराने सिर को काट कर, तली पर रखकर, दिव्य बुद्धि के दाता परमपिता से नया शीश अर्थात् दिव्य बुद्धि लेने की यह अनोखी बात थी। इसलिए ही तो इस जीवन को मरजीवा जन्म कहा गया है। इस जन्म के कारण ही तो सच्चे ब्राह्मणों को द्विज अर्थात् दूसरा जन्म लेने वाला माना गया है। गोया शूद्र (क्षुद्र) जीवन का अंत करके अब ब्राह्मण (पवित्र)बनने का अथवा कीड़े से बदलकर शृंगी बनने का सवाल था। बहुत से यज्ञ-वत्सों ने यह जन्म लिया और उनकी तरह मैंने भी यह अलौकिक जन्म अथवा जीवन लिया।

क्रमशः

### यज्ञ पिता ने की हमारी पालना...

अतः अब हम ब्रह्मामुख वंशावली अर्थात् ब्रह्मा बाबा के मुख से (मुख द्वारा दिए गए ज्ञान से) पैदा हुए ब्राह्मण-ब्रह्माकुमारियां- ब्रह्माकुमार कहलाए। यज्ञ-पिता और यज्ञ-माता द्वारा ही लालन-पालन और हमारी शिक्षा शुरू हुई। बड़ी आयु होते हुए भी अब फिर से इस ईश्वरीय गुरुकुल में हमार न्यारा-प्यारा और निश्चिंत विद्यार्थी जीवन प्रारंभ हुआ। ईश्वरीय विद्या के अध्ययन में ही व्यस्त हम ब्रह्मा बाबा तथा सरस्वती मैया के रूहानी धर्म के बच्चे बने। अहा! इस अलौकिक जीवन के सुख का क्या वर्णन करें। नित्य प्रति ज्ञान की मीठी-मीठी बातें सुनते, अलौकिक और पारलौकिक माता-पिता का निःस्वार्थ और आत्मिक स्नेह पाते ईश्वर अर्पण हुए धन से, सच्चे ब्राह्मणों द्वारा बनाया पवित्र ब्रह्मा भोजन लेते, ईश्वरीय कुटुंब में रहते, हमारा यह नए प्रकार का बचपन तो हमें कभी स्वप्न में भी नहीं भूल सकता। अतीन्द्रिय सुख वाला यह जीवन भी सभी ब्रह्मा-वत्सों ने पाया। परन्तु मेरा जो चौथा जन्म हुआ, वह किसी-किसी ने ही पाया।

# कुछ अपने लिए भी नियम बनाएं

प्रेरणापुंज

**दादी जानकी**
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

» शिव आमंत्रण, आबू रोड ।कईयों को शुद्ध संकल्प में स्थित रहना मुश्किल लगता है। व्यर्थ संकल्पों में टाइम चला जाता, कितने दिन भी चले जाते, उनसे छूटना मुश्किल लगता है। तो यह रिजल्ट अपनी देखो। तो हर एक अपना चार्ट देखो, आत्माओं की सेवा तो करनी ही है लेकिन जब याद में बैठते तो वह आत्मायें सामनें क्यों आयें! तो हर एक विचार करो कि क्या विधि विधान हो। कुछ तो अपने लिए नियम बनाने पड़ेंगे। अगर बाबा की याद के बीच में सेवा अर्थ आत्माओं की याद आयेगी तो और भी फ्रीडम मिल जायेगी। परन्तु याद को परिपक्व बनाना है, विकर्म विनाश करने हैं, सारे हिसाब-किताब चुक्तु करने हैं, इसके लिए इतना ध्यान चाहिए। अब कहाँ भी किससे मेरा हिसाब-किताब न बने। एक दो के स्वभाव-संस्कारों के चिंतन से भी हमारा हिसाब-किताब बन जाता है। ऐसा हिसाब-किताब बन जाता है जो न चाहते भी बुद्धि में वही स्वभाव-संस्कार याद आते रहेंगे। चाहेंगे बाबा को याद करें लेकिन याद वह बातें आयेंगी। फिर उसी सोच में पड़ जायेंगी। तो हम ऐसा हिसाब-किताब बनायें ही क्यों जो उसे मिटाने का चिंतन करना पड़े। हम सेवा अर्थ हैं, सेवा में हमारा कोई स्वार्थ नहीं है, तो सेवा हमारा हिसाब-किताब चुक्तू कराये लेकिन हिसाब-किताब बने नहीं। सेवाएं तो साधन हैं बाबा को याद करने के लिये, बाबा को याद दिलाने के लिए। सेवा इतना फायदा देती है। जो व्यर्थ बातें करने में, सोचने में समय बर्बाद नहीं होता। तो सेवा में भी इतनी याद हो और जिन्हों के संग सेवा करते हैं उनके अन्दर भी ऐसा यादगार बन जाए जो कभी भूले नहीं। हम अलौकिक सेवा साथी हैं, तो आपस में एक दो के प्रति साधारण ख्याल कभी न आयें। यह गलती कभी नहीं करना।

जिनको श्रीमत पर चलना है, उसने अपने लिये कुछ विधान जरूर बनाके रखे हैं। जिनके अन्दर है कि श्रीमत ही सदा सुखदाई बनाती है, मैं भी सुखी, मेरे संग में रहने वाले भी सुखी तो अन्दर से गैरन्टी है हम सूर्यवंशी में आने वाली आत्मा हूँ। ऊँच पद पाने वाली आत्मा हूँ। कभी यह ख्याल आ नहीं सकता है - जो मिलेगा सो अच्छा, सब थोड़े ही लक्ष्मी-नारायण बनेंगे! ऐसे ख्याल न आये हैं, न आ सकते हैं। पद पाना है तो ऊँच पढ़ना है नम्बरवन में आना है। मेरे मम्मा बाबा नम्बरवन हैं गैरन्टी है, और भी नम्बरवन में आने वाले हैं, आँखे देख रही हैं परन्तु मेरा भी तो हक है। मेहनत है, दिल सच्ची है तो आ सकती हैं। फिर यह क्यों कहूँ- मैं कैसे आ सकती हूँ! इस शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प में रहने का भी विधान बनाना चाहिए। मुझे इस कायदे को तोड़ना नहीं है - इस कायदे में फायदा है।

### बच्ची, सी फादर, फालो फादर...

बाबा कहते - बच्ची, सी फादर, फालो फादर, कितना अच्छा विधान है। इस पर चलने से सारी उम्र बहुत सुख पाया है, कोई दुःख दे नहीं सकता है। देने वाला दे हम ले नहीं सकते हैं। देने वाला टेस्ट करता है, लेने वाला न लेना हमारे हाथ में है। प्रकृति, माया कई प्रकार से दुःख देने के कारण बनेंगे परन्तु मुझे दुःख नहीं लेना है। कभी देने वाले देने के लिये हमारे पीछे पड़ेंगे। देखेंगे कि कहाँ तक यह दुःख सुख से न्यारी स्थिति में रह सकती है। शान्ति, आनन्द, प्रेम स्वरूप आत्मा तब रह सकते है जब हमारा संकल्प शुद्ध है अच्छे वायुमण्डल में अपने को रखना और औरों को ऐसे वायुमण्डल बनाकर - यह गुप्त सेवा हम सबको करनी है। अमृतवेले से जिस स्थान पर हमारा पाँव है, जहाँ भी हैं- वायुमण्डल में वह शक्ति हो, इतनी शान्ति हो, इतना प्रेम हो जैसे हम बाबा के रूम में जाते हैं तो बाहर के सब संकल्प शान्त हो जाते हैं।

## ब्रह्माकुमारीज विश्वभर में लोगों को शुद्ध सात्विक भोजन और सात्विकता अपनाने की शिक्षा दे रही: डॉ. रामविलास दास वेदांती, सदस्य, रामजन्मभूमि मंदिर ट्रस्ट

तृतीय सत्र 'गीता में मनोविकारों पर विजय हेतु अहिंसक युद्ध का वर्णन है' विषय पर अयोध्या से आए राम मंदिर आंदोलन से जुड़े व रामजन्मभूमि मंदिर ट्रस्ट के सदस्य डॉ. रामविलास दास वेदांती ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज ने शुद्ध सात्विक बनाने का कार्य न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में किया है। यहां से लोगों को शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करने और जीवन में सात्विकता अपनाने की शिक्षा दी जा रही है। इस संस्था ने पूरे विश्व में जो कार्य किया है वह किसी और ने नहीं किया है। सन 2007 में एक सम्मेलन में नेपाल गया था तो वहां कहीं सात्विक भोजन नहीं मिला तो ब्रह्माकुमारीज में गया वहां मुझे सात्विक भोजन मिला। मैं 15 दिन आसाम में घूमा और वहां के सेवाकेंद्र पर जाकर भोजन किया। एक बार मैं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अमेरिका गया था, वहां मुझे जब सात्विक भोजन नहीं मिला तो मैंने वहां के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर भोजन किया।

### हमें ज्ञान मुरली से परमपिता परमात्मा रोज सिखाते हैं

मॉरीशस से आई महात्मा गांधी संस्थान की सहआचार्य कुमारी संयुक्ता वन ने कहा कि तृप्ति का संबंध आत्मा से है। जहां शांति, पवित्रता, आनंद, ज्ञान है वहां आत्मा तृप्त रहती है और हम सुखी रहते हैं। मुझे बचपन से ही गीता पढ़ने का शौक था, इसके चलते दस साल काशी में भी रही। वहां सैकड़ों बार गीता का अध्ययन किया। उसके मर्म को जानने का प्रयास किया। लेकिन मुझे सच्चा ज्ञान राजयोग ध्यान सीखने के बाद मिला। ब्रह्माकुमारीज़ में चलने वाली ज्ञान मुरली के माध्यम से रोज परमात्मा हमें सिखाता है कि जीवन में कैसे चलना है, क्या करना है, कैसे सोचना है, कैसे बोलना है।

मप्र, जबलपुर से आईं गीता विदुषी बीके डॉ. पुष्पा पांडे ने कहा कि गीता में लिखा है कि श्रीमद भगवत गीता एक यूनिक यूनिवर्सल शास्त्र है जो हर एक मानव के लिए पर्सनल प्रोफेशनल लाइफ के लिए बहुत ही आवश्यक है। गीता में वर्णित ज्ञान राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सभी समस्याओं को हर कर सकता है। आज इस ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। हमें नई पीढ़ी को गीता ज्ञान, कर्म सिद्धांत के रहस्यों से अवगत कराना होगा। गीता के अध्ययन के बाद मन में कोई विकार नहीं रह जाता है।

कर्नाटक हुबली से आए गीता विद्वान बीके बसवराज राजऋषि ने कहा कि गीता में लिखा है कि जैसे एक मां अपने बच्चों को प्यार-दुलार देती और महानता के शिखर पर आरूढ़ होने का रास्ता दिखाती है, उसी तरह गीता भी हमें शीतल शांति प्रदान करती है। यह मनुष्यों को सद्शिक्षा देती और नर से नारायण बनने की राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती है। इस ज्ञान से हम भावलोक में जाते हैं जहां अलौकिक ज्ञान-प्रकाश, अपरिमित आनंद प्राप्त होता है। इस ज्ञान को पाने के बाद कुछ पाने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

### एक परमात्मा को ही सृष्टि का संपूर्ण ज्ञान होता है: बीके त्रिनाथ भाई, गीता विद्वान

समापन सत्र में हैदराबाद से आए गीता विद्वान बीके त्रिनाथ भाई ने कहा कि गीता में लिखा है कि केवल मैं एक ही परमपिता परमात्मा हूं जिसे सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान है। देहधारियों को केवल एक जन्म का ज्ञान होता है जबकि परमात्मा को संपूर्ण सृष्टि का ज्ञान होता है। परमात्मा ने कहा है कि मैं ज्ञान भी देता हूं, विज्ञान भी देता हूं। मैं ज्ञान का सागर हूं। मैं सारा ज्ञान अपने बच्चों को देता हूं। गीता के सातवें अध्याय के दूसरे श्लोक में लिखा है कि संपूर्ण ज्ञान जीवन में कैसे धारण करें वह ज्ञान मैं ही देता हूं।

धार्मिक प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके गोदावरी बहन ने कहा कि गीता में लिखा है कि भगवान ने सिखाया है मजबूत बनो, मजबूर नहीं। मजबूर, अधीनता वाले को सपने में भी सुख नहीं मिल सकता है। गीता का ज्ञान हमें कर्म सिद्धांत को गहराई से सिखाता है। गीता में ही जीवन को श्रेष्ठ, सद्मार्ग पर ले जाने, आत्मा का परमात्मा से मिलन कराने की शिक्षा, मार्गदर्शन दिया हुआ है। आज लोग गीता ज्ञान से विमुख होने के कारण ही मानसिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। इसका ज्ञान हमें नवजीवन प्रदान करता है।

गुरुग्राम से आईं ओआरसी की निदेशिका बीके आशा बहन ने कहा कि गीता में लिखा है कि धर्म की अतिग्लानि होने पर परमात्मा इस धरा पर आकर हम मनुष्यात्माओं को गीता ज्ञान देते हैं। वह सृष्टि के चारों युग, तीन लोक, जन्म-मरण का ज्ञान प्रदान कर कर्म, अकर्म, सुकर्म और विकर्म की गति बताते हैं। गीता का ज्ञान ही आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। परमात्मा कहते हैं मुझे याद करो तो मैं तुम्हें जन्मोजन्म के लिए स्वर्ग की बादशाही दूंगा। पवित्र बनो, योगी बनो। यह समय की मांग है।

धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके मनोरमा बहन ने कहा कि यह कर्मक्षेत्र है, यहां कोई कर्म सन्यासी नहीं बन सकता है। परमात्मा कहते हैं कि तुम मुझे याद करो तो मैं तुम्हें पापों से मुक्त कर दूंगा। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मान्यता है कि जो ज्ञान हम दूसरों को सुनाते हैं वह पहले हमारे भी जीवन में हो। यदि यहां पांच विकारों को छोड़ने की बात कही जाती है तो वह बातें पहले खुद भी धारण करते हैं। परमात्मा अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को मुख्य चार सब्जेक्ट बताते हैं- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा का गहराई से ज्ञान देते हैं।

धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके रामनाथ भाई ने कहा कि परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर राजयोग के माध्यम से हमारे पापों को नष्ट करने की विधि सिखलाते हैं। जीवन में दिव्य गुणों की धारणा कराकर कमलफूल समान बनाते हैं। जब जीवन में तीन चीजें हो जाती हैं तो आपका जीवन ही सेवामय बन जाता है। इस सत्य को जानकर आज ब्रह्माकुमारीज़ से ज्ञान लेकर लाखों लोगों ने अपना जीवन मूल्यवान, चरित्रवान बनाया है। वर्तमान में सृष्टि के महापरिवर्तन का स्वर्णिम काल ही चल रहा है। अभी नहीं तो कभी नहीं।

### गीता ज्ञान सुना लेकिन परिवर्तन क्यों नहीं हुआ

कर्नाटक से आईं गीता विदुषी राजयोगिनी बीके वीणा बहन ने कहा कि आज सबसे बड़ा सवाल यह है कि हम सदियों से गीता ज्ञान सुनते आ रहे हैं लेकिन हमारे जीवन में परिवर्तन क्यों नहीं आया है? गीता में ज्ञानी की परिभाषा दी गई है कि गीता अर्थात् हर बात को जानकर, समझकर उसे जीवन में धारण कर चलने वाले। ज्ञानी पुरुष वही हैं जिसके जीवन में भी ज्ञान हो। किसी महापुरुष ने कहा है कि सौ जन्म लेकर भी ज्ञान नहीं मिला तो मुक्ति नहीं मिलेगी। गीता में वर्णित युद्ध हिंसक हो या अहिंसक हो। लेकिन युद्ध सबसे पहले हमारे मन में शुरू होता है।

### श्रीराम के जैसा बनने का पुरुषार्थ भी करें

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी ने कहा कि हम मां दुर्गा, मां लक्ष्मी, मां सरस्वती की उपासना-आराधना तो करते हैं लेकिन जब हमारी बेटी उस रास्ते पर चलने का संकल्प करती है। उनके जैसा बालब्रह्मचारी, पवित्र बनने के लिए कहती है तो हम ही उसका साथ नहीं देते हैं। हम सभी श्रीहनुमान जी की महिमा गाते हैं लेकिन जब कोई बालक उनकी तरह जीवन में पवित्रता का व्रत लेने का संकल्प लेता है तो उसे ही रोकते हैं। हमें यह समझना होगा कि आखिर समाज में यह दोहरी मानसिकता क्यों है? परमात्मा सृष्टि पर दो कार्य करते हैं अधर्म का विनाश और सतधर्म की स्थापना।

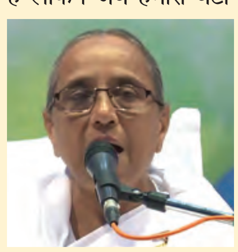

ज्ञान-मंथन ] ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में

# हमारी संस्कृति आत्म
# कि धार्मिक पूजा-पाठ

देशभर से आए संत-महात्माओं और महामंडले

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन परिसर म
केरल के राज्यपाल आरिफ मोहमद खान। मंचासीन संस्थान की मु

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शां
परिसर में अखिल भारतीय भगवतगीता महासम्मेलन आयोजित किया
शुभारंभ केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने किया। पांच दि
महासम्मेलन **'वर्तमान नाजुक समय के लिए गीता के भगवान**
**श्रीमत'** विषय पर आयोजित किया गया।
देशभर से आए संत-महात्मा, महामंडलेश्वर को संबोधित करते हुए राज्
खान ने कहा कि मैं आपको ज्ञान देने नहीं, बल्कि अपनी जिज्ञासाओं को मि
आया हूं। आप सभी महान विभूतियों को मैं नमन करता हूं। हमारी भा
संस्कृति में संत-महात्माओं, तपस्वियों और मनीषियों को आदर्श माना ग
न कि संतरी-राजाओं को। क्योंकि हमारी सभ्यता और संस्कृति आध्यात
आधारित है। भारत का धर्म ही आध्यात्मिकता है। हमारी सभ्यता और संस
आत्मा से परिभाषित होती है न कि वेशभूषा, रंग और धार्मिक पूजा-पाठ
विधियों से। संतों के साथ बैठने से अनाशक्ति पैदा होती है। अनाशक्ति से
भंग होता है और जब हमारा इस संसार से मोहभंग हो जाता है, ज्ञान की
हो जाती है तो हम परमात्मा के समीप पहुंच जाते हैं। भागवत गीता में दिया
ज्ञान सबसे श्रेष्ठ और जीवन जीने की कला सिखाने वाला ज्ञान है।

### वैदिक काल से है हमारी परंपरा- खान

राज्यपाल खान ने कहा कि भारतीय परंपरा वैदिक काल से है। बाकी अन्य

रतीय भगवतगीता महासम्मेलन आयोजित

# परिभाषित होती है न विधियों से: राज्यपाल

दन की माला, पुष्पगुच्छ से किया गया स्वागत

ल भारतीय भगवतगीता महासमेलन के शुभारंभ सत्र में संबोधित करते ाजयोगिनी दादी रतनमोहिनी व वरिष्ठ बीके भाई-बहनें।

2500 वर्ष, 1500 वर्ष और 1200 वर्ष पूर्व ही आए हैं लेकिन हमारी नन संस्कृति सबसे प्राचीन है। योगा वह है जो अनेकता में एकता पैदा कर ीता में कहा गया है कि जहां योगेश्वर कृष्ण होंगे, योगेश्वर कृष्ण अर्थात् जहां प्रज्ञा होगा, वहां आत्मसुख हासिल होगा। गीता में कहा गया है और सभी का सार यही है कि हमें जीवन में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और जब ज्ञान हो जाए तो उसे दूसरों के साथ बांटना चाहिए। ताकि उनका भी कल्याण के। ऐसे ही ज्ञान को बांटने का कार्य राजयोगी भाई-बहनें कर रहे हैं। हमारी ति में देने का भाव रहा है। भारत की बुनियाद मानस में है। भारत उस न की शक्ति से निरंतर अपने में सौगात पैदा करता है। मैं भारत से अगाध करता हूं। मेरे प्रेम का मतलब यह नहीं है कि मैं यह मिट्टी भूगोल के हिस्से ूर्ति का रूप देकर उसकी उपासना करूं। इस धरती पर पैदा हुआ इसलिए भी नहीं करता हूं। इस देश से इसलिए प्रेम करता हूं कि भारत ने दुर्गम परिस्थिति ब्दों को बचाकर रखा है। भारत की खूबी बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिकता है।

## कता लाने का प्रयास कर रही ब्रह्माकुमारीज़

पाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोगी भाई-बहनें दुनियाभर में कता में एकता लाने का प्रयास कर रहे हैं। ये जिस समर्पण भाव से विश्व में जुटे हैं वह सराहनीय है। इतनी बड़ी संस्था का संचालन हमारी बहनों, शक्तियों द्वारा किया जा रहा है जो नारी शक्ति की महिमा बताता है।

## दादी के संबोधन के दौरान राज्यपाल ने पकड़ा माइक

राज्यपाल की सरलता है कि जब संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी मंच से संबोधित कर रहीं थीं तो उन्होंने खुद माइक पकड़ रखा था। दादी ने कहा कि परमात्मा कहते हैं- मीठे बच्चे मैं ज्योतिर्बिंदु परमात्मा आप सभी ज्योतियों से मिलकर बहुत खुश हो रहा हूं। मेरा नाम शिव है। मैं ऊंचे ते ऊंचे परमधाम का रहने वाला हूं। मैं ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवेश कर नई दैवी दुनिया की स्थापना करता हूं।

### योग-साधना आध्यात्मिक जीवन का आधार है: बीके बृजमोहन भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि विश्व विद्यालय उसे कहा जाता है जहां सारे विश्व के इतिहास अर्थात् यहां दैवी-देवताओं का राज्य कब होता है, कैसे होता है। भूगोल अर्थात सृष्टि के चारों चक्रों का ज्ञान बताया जाए, उसे विश्व विद्यालय कहते हैं। ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की स्थापना स्वयं निराकर परमात्मा ने की और इसके कुलपति हैं प्रजापिता ब्रह्मा। इस यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेने वाले और पढ़ने वाले भाई बहनों को ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहते हैं। भगवान कहते हैं सृष्टि के अंत में मैं ऐसा यज्ञ रचता हूं जिसमें देवी-देवता बनने की शिक्षा दी जाती है। भगवान ने गीता में कहा है कि जिसके कर्म ब्रह्मा के समान अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, ब्रह्म को जानने वाला हो, वही सच्चा ब्राह्मण है। यह ज्ञान यज्ञ स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा स्थापित अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ ही है। ब्रह्माकुमारीज में जुड़ने वाले प्रत्येक भाई-बहन, छोटे-बड़े सभी के लिए पहली बात ब्रह्मचर्य पालन की शिक्षा दी जाती है। ये आध्यात्मिक ज्ञान उसी की बुद्धि में ठहर सकता है जो पवित्र हो। इसके साथ ही सात्विक भोजन और नियमित आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण-पठन-पाठन इसका आधार है। इसलिए ब्रह्माकुमारीज में बिना प्याज-लहसुन के सात्विक भोजन ही बनाया जाता है। विश्वभर के सभी सेवाकेंद्रों पर रोज परमात्म महावाक्य मुरली सुनाई जाती है। साथ ही नियमित योग साधना आध्यात्मिक जीवन का आधार है।

### गीता से ही मिलता है मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान: बीके ऊषा बहन

गीता विशेषज्ञ वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा बहन ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गीता का स्थान सर्वोच्च है। भारतीय साधु-संन्यासियों के अन्तरतम में वीणा की झंकार की तरह गीता के श्लोक झंकृत होते हैं। कथा-प्रवचनों से लेकर घर-घर तक जीवन-सुधार परक उपदेश, नीति-नियमों का जो भी ज्ञान दिया जाता है, उसमें गीता का प्रकाश कहीं न कहीं अवश्य पड़ता है। धरती पर शायद ही ऐसा कोई स्थान हो, जो गीता के प्रभाव से मुक्त हो। भारत भूमि तो उसके स्पर्श से धन्य हो गई है। गीता को, धर्म-आध्यात्म समझाने वाला अमोल काव्य कहा जा सकता है। सभी शास्त्रों का सार एक जगह कहीं यदि इकट्ठा मिलता हो, तो वह जगह है-गीता। गीता रूपी ज्ञान-गंगोत्री में स्नान कर अज्ञानी सद्ज्ञान को प्राप्त करता है। पापी पाप-ताप से मुक्त होकर संसार सागर को पार कर जाता है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान मिलता है।

### जो ज्ञान हम दूसरों को देते हैं उसे अपने जीवन में भी धारण करते हैं: बीके राजू भाई

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष वरिष्ठ राजयोगी बीके राजू भाई ने कहा कि परमात्मा ने तीन स्वरूपों में हमारी पालना की है। पिता के रूप में हमें पालना दी। परमात्मा ने कहा कि मेरे बच्चे तुम मेरे योगी बच्चे हो। जैसे हो, तुम मेरे हो। परमात्मा के महावाक्य ब्रह्माकुमारीज़ के विश्वभर के सेवाकेंद्रों पर सुबह 7 बजे एक साथ सुनाए जाते हैं। इस संस्थान की मान्यता है कि जो हम दूसरों को ज्ञान दे रहे हैं वह पहले अपने जीन में भी धारण करते हैं। जैसे हम लोग कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार शत्रु हैं तो बीके भाई-बहनें इन्हें अपने जीवन में भी धारण करते हैं। हम कहते हैं कि ब्रह्ममुहूर्त का समय अमृत के समान है, इस समय परमात्मा हम बच्चों को वरदान देते हैं, दुआ देते हैं, शक्ति भरते हैं। आत्मा की तीन चैतन्य शक्तियां हैं- मन-बुद्धि- संस्कार। जब हम इनके स्वराज्य अधिकारी बनकर कर्म करते हैं तो हमारे कर्म श्रेष्ठ कर्म बन जाते हैं।

## संतों ने एक स्वर में कहा- आध्यात्मिक ज्ञान से इस दुनिया में बदलाव आएगा

महासम्मेलन में देशभर से आए संत-महात्माओं का चंदन की माला, शॉल और पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। मधुरवाणी ग्रुप ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुंबई से आई सुप्रसिद्ध गायिका बीके अस्मिता ने आइना साफ किया, साफ नजर तू आया..., अहमदाबाद की डॉ. बीके दामिनी बहन, बीके युगरतन ने मधुर आध्यात्मिक गीत प्रस्तुत कर समां बांध दिया। इस दौरान यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानि.... पर सुंदर नाटय प्रस्तुति दी गई। गीता में वर्णित युद्ध हिंसक नहीं अहिंसक था विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत करने वाले सुरेश डांगी को ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से राज्यपाल ने एक लाख रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया। सभी संतों ने एक स्वर में कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान से इस दुनिया में बदलाव आएगा।

**इन गीता मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी व्यक्त किए अपने विचार-**

- कुरुक्षेत्र से आए श्रीकृष्ण म्यूजियम के निदेशक राजेंद्र सिंह राणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक नए प्रकल्प को तैयार कर रहा है। संस्था गीता संदेश को बहुत आसान तरीके से जन-जन तक पहुंचा रही है। गुजरात से आए अश्विनी भाई ने कहा कि यहां दिया जा रहा ज्ञान अवर्णीय है। यहां की साफ-सफाई और व्यवस्था देखकर मैं अभिभूत हूं। यहां आकर अद्भुत शांति की अनुभूति हुई।
- अमेरिका से आए विनोद जैन ने कहा कि मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे साकार ब्रह्मा बाबा से मिलने का सौभाग्य मिला। बाबा की योग-तपस्या का कमाल था कि बाबा से डेल्टा बेव निकलती थीं। वह यह जान लेते थे कि हमारे मन में क्या चल रहा है।
- गुजरात के रामकथा वाचक प्रकाश बापू ने कहा कि यहां आकर मन को बड़ा संतोष मिला है। यहां का सेवाभाव देखकर मन प्रसन्न हो गया।
- उप्र की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके करुणा बहन, दिल्ली की बीके विधात्री बहन ने राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराते हुए कहा कि अनुभव करें मैं आत्मा इस पांच तत्वों के शरीर रूपी रथ पर विराजमान, इसकी मालिक एक दिव्य ज्योति हूं। मेरा वास्तविक धाम परमधाम है। जहां अतीन्द्रीय शांति, आनंद है। जैसे मैं आत्मा रूप में बिंदु हूं वैसे ही मेरे पिता भी ज्योतिर्बिंदु हैं।
- मुंबई की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके कुंती बहन, बीके शोभा बहन, दिल्ली की बीके सपना बहन, बीके रुपेश भाई, बीके श्रीनिधि भाई, ने संचालन किया। बीके युगरतन ने गीत प्रस्तुत किया। आभार इंदौर के धार्मिक प्रभाग के समन्वयक बीके नारायण भाई ने माना।

# हमारे श्रेष्ठ कर्म से बढ़ती है आत्मा की शक्ति

## परमात्मा का परिचय नहीं होने से उन्हें याद करते समय भागता है मन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आज लोग बाहर को प्रोटेक्ट करने के लिए अंदर का नुकसान कर रहे हैं, लेकिन बाहर प्रोटेक्ट हो भी जाता है, लेकिन जब अंदर प्रोटेक्शन नहीं होती है तो बाहर सबकुछ भी हो तो भी जीवन में जो खुशी का अनुभव करना चाहते हैं वह नहीं होता। आजकल लोग कहते हैं मेरे पास सबकुछ है लेकिन संतोष नहीं है। संतोष अर्थात भरपूर आत्मा। भरपूर धन नहीं भरपूर आत्मा अर्थात् शक्तिशाली आत्मा ही संतुष्ट होती है। संतुष्ट होने के लिए कोई प्राप्ति की जरूरत नहीं है। संतुष्टता तो एक संस्कार है, लेकिन उस संतोष को अनुभव करने के लिए आत्मा को हमेशा सही कर्म करना होगा। चाहे जीवन में कितनी भी मुश्किल परिस्थिति आ जाए, लेकिन सही श्रेष्ठ कर्म ही आत्मा की शक्ति को बढ़ाता है।

जैसे हम सत्य की खोज में रहते हैं और सत्य बोलना है तो दो बातें ही अलग हो गई ना। तो सच अर्थात् सारा दिन में जो हम काम कर रहे हैं, जो हमारे साथ जीवन में हो रहा है, जो हमें किसी को कहना है। जो हमारा सच है, क्या हम उस बात को वैसे का वैसे सम्पूर्ण रीति बिना कोई मिलावट किए बिना कुछ छुपाए वह जैसा है वैसा उसको समझकर दूसरे को बता सकते हैं तो वो सच है।

सत्य क्या है? सत्य अर्थात् जो अविनाशी है और कोई हमसे पूछे कि अपना परिचय दीजिए तो हम अपने बारे में क्या कहते हैं हम अपना नाम, शहर, देश, व्यवसाय, पढ़ाई यही बातों को परिचय समझते आए। बच्चा पैदा होता है तो उसका कुछ भी नहीं होता सबसे पहले उसको एक शरीर मिलता है फिर उसको माता-पिता मिलते हैं, उसे नाम मिलता है परिवार, सदस्य और रिश्ते मिलते हैं। एक दिन वो सब कुछ उससे छूट जाता है अर्थात् वो सारी चीजें आज हैं और अचानक से एक क्षण उसमें से कुछ भी नहीं है लेकिन एक चीज है जो हमेशा थी और हमेशा रहेगी। जो शक्ति इस शरीर को चला रही है और हम सत्य को खोज रहे हैं तो बस हम इसी बात को खोज रहे थे कि हम कौन हैं? यह सत्य जब हमें पता चल जाता है तो जीवन में सत्य बोलना बहुत सहज और सरल हो जाता है। इस सत्य को जानना हर एक व्यक्ति के लिए जरूरी है।

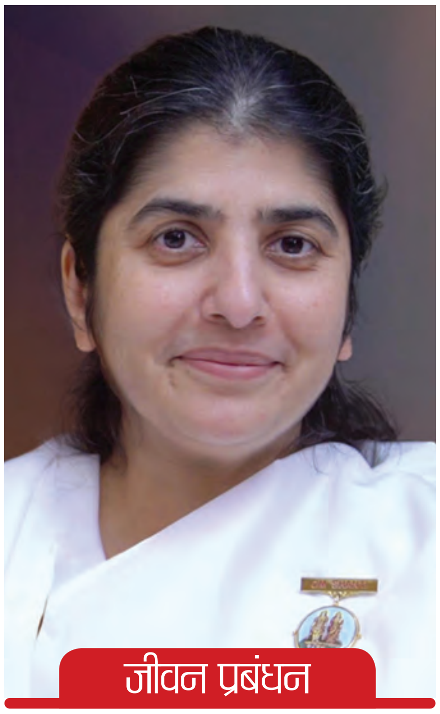

जीवन प्रबंधन

**बी.के. शिवानी**
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन
गुरुग्राम, हरियाणा

## सहनशक्ति माना एक भी निगेटिव थॉट्स न चलें-

आत्मा में सहनशक्ति ज्यादा है, कोई आत्मा में सहनशक्ति कम है। ये आत्मा के जेंडर पर नहीं डिपेंड करता है, ये अलग बात है कि सोशल कंडीशनिंग ने हमें क्या सिखाया, चुप रहो। तो चुप रहना सहन शक्ति नहीं है। मुख से चुप रहे और अंदर से बोलते गए इसको सहनशक्ति नहीं बोलते हैं। तो सोशल कंडीशनिंग ने हमें क्या कहा- चुप रहो तो हम चुप रहे। कहां से चुप रहें। मुख से चुप रहे अंदर रोते गए। अंदर अपने आप को विक्टिम फील करते गए। बेचारी मैं मुझे ही इतना सहन करना पड़ता है। ये सहनशक्ति नहीं है। सहनशक्ति मतलब जिसके अंदर एक भी निगेटिव थॉट नहीं चलती है उसको कहते हैं सहनशक्ति।

## पहले कंफर्ट कम थे और शक्ति ज्यादा थी...

हमारे पहले के जेनरेशन के पास कंफर्ट कम थे लेकिन शक्ति ज़्यादा थी। अगर हमने ध्यान नहीं रखा तो हमारी अगली जेनरेशन के पास कंफर्ट सारे होंगे। आप और मैंने एक-एक चीज अपने घर की खरीदी है, उनको सारा कंफर्ट मिलने वाला है। जिनको कंफर्ट मिलेगा बिना मेहनत किए उनकी शक्ति तो वैसे ही कम होगी। क्योंकि उनको ये नहीं पता कि बिना कंफर्ट के भी कोई जीवन हो सकता है। उनको ये नहीं पता कि जब चीजें मेरे अनुसार न हों ऐसा भी कोई जीवन हो सकता है। इसलिए हमारी रिस्पांसिबिलिटी है कि हम उनको कंफर्ट के साथ क्या दें? आज हर पैरेंट अपने बच्चे को कंफर्ट देना चाहता है।

## बच्चों को देना होगी इनर पॉवर...

हम अपने बच्चों को सब कुछ दें, लेकिन क्या अगर किसी के पास सबकुछ अच्छा बाहर होगा तो वह जीवन में सफल होगा? सफल होने के लिए उस आत्मा के पास क्या होना चाहिए? इनर पॉवर। इनर पावर मतलब एडजस्ट करने की शक्ति, टॉलरेट करने की शक्ति, अलग-अलग संस्कारों के साथ मिलाकर चलने की शक्ति, प्रॉब्लम आने पर स्टेबल रहने की शक्ति, औरों से प्यार से काम करवाने की शक्ति। ये सारी शक्ति कौन से स्कूल में देंगे, तो ये सारी शक्तियां हमें अपने अंदर भरकर अपने बच्चों को देनी हैं। जब भी कोई कहता है न टाइम नहीं है। हमारे पास मेडिटेशन करने के लिए हम उनको यही कहते हैं अपने लिए मत करो अपने बच्चों के लिए करो। क्योंकि ये वो शक्ति है जो खुद अपने अंदर धारण किए बिना उनको दी जा नहीं सकती, क्योंकि वो खरीद कर नहीं दी जा सकती है। वो अंदर क्रिकेट करके फिर दी जा सकती है। तो हमें अपने बच्चों को इमोशनली स्ट्रांग बनाना है ये समय की पुकार है। जो डिप्रेशन बढ़ रहा है, बीमारियां बढ़ रही है, सबसे इम्पोर्टेन्ट रिश्ते खत्म होते जा रहे हैं। छोटी बातों में कहते हैं बस अब इनके साथ नहीं रह सकते हैं। हम उस जेनरेशन के तरफ जाएंगे अभी कि मुझे यह एडजेस्ट क्यों नहीं करना। अभी अच्छा महसूस नहीं कर रहे क्योंकि वो बड़े ऐसे ही हुए थे ना। आपको और मेरे को ऐसी चॉइस नहीं मिली थी कि ऐसा महसूस हो तो ऐसा करना। हमारे मम्मी-पापा ने कहा था ये करना है, अभी ये बनना है, अभी ये होना है। हम करते गए तो हमारे अंदर कौन सी शक्ति आ गई जो कहा गया है वो करना है। मुश्किलें आएंगी और उसमें अपना 100 प्रतिशत देना है। शादी की है तो वापस नहीं आना है। एडजस्ट करते जाओ, करते जाओ तो कई शक्ति बढ़ती जाएंगी। इसलिए आज बच्चों के लिए इनर पॉवर बहुत जरूरी है।

राष्ट्रीय सम्मेलन

**प्रशासक सेवा प्रभाग के सम्मेलन में आईएएस मीणा बोले-**

# अपनी शक्ति-कमजोरी का ज्ञाता ही लीडर

प्रशासन प्रभाग के राष्ट्रीय सेमीनार के दौरान मंचासीन बीके बृजमोहन, बीके आशा, बीके अवधेश, बीके हरीश व अन्य।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। कल्चर ऑफ कमिटमेंट विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से वरिष्ठ आईएएस, रिटायर्ड अफसर, कंपनियों के मैनेजर्स, अधिकारी-कर्मचारियों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ आईएएस कुंजीलाल मीणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान से जो जुड़ जाता है वह सबसे बड़ा लीडर बन जाता है। यहां तक कि महामहिम राष्ट्रपति जी ने भी यहां से राजयोग ध्यान की शिक्षा ली है। जिसका जितना बड़ा हृदय और दिल होता है वह उतना ही बड़ा लीडर बनता है। हर लीडर को अपने आप में यह चार चीजें देखना चाहिए। पहली है- मेरी शक्ति क्या है, मेरे गुण क्या हैं, मेरी अच्छाई क्या है। दूसरा है अपनी वीकनेस क्या है, उसे अपनी डायरी में लिखें, उसे दूर कैसे किया जा सकता है। तीसरा है हमें जीवन में जब भी सीखने का अवसर मिले तो उसे गंवाना नहीं चाहिए। सबसे अच्छी आदत है हमें रोज पुस्तक पढ़ना चाहिए। इससे हमें निरंतर कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। पुस्तकों को अपना दोस्त बना लें। चौथा है हमें अपने लक्ष्य की जानकारी हो, उसे जानते हों और उस पर आगे बढ़ता हो। एक लीडर की, एक कलेक्टर की सबसे बड़ी क्वालिटी होती है कि वह हमेशा अपने कर्मचारियों, साथियों को मोटिवेट करते रहें। मोटिवेट करके ही हम लोगों को अच्छा काम करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

कटक से रिवेन्यू रीजनल ऑफिसर आईएएस धनंजय सिंह ने कहा कि यहां आकर बहुत खुशी हुई। यहां एक अच्छे लीडर बनने की शिक्षा ले सकते हैं। लीडर बनने के लिए आध्यात्म की शिक्षा बहुत जरूरी है। प्रशासक विंग की अध्यक्षा बीके आशा दीदी, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके अवधेश दीदी, मुंबई से पधारीं बीके लाजू दीदी, गुरुग्राम से पधारीं बीके विधात्री, नेपाल से पधारे चीफ इलेक्शन कमिश्नर दिनेश कुमार थापलिया, भुवनेश्वर से कल्चर डिपार्टमेंट के डायरेक्टर, सीनियर आईएएस रंजन कुमार दास, सेवानिवृत्त आईएएस देवेंद्र उपाध्याय, भोपाल से बीके डॉ. रीना ने भी संबोधित किया।

# देशभर से पहुंचे पांच हजार से अधिक लोगों ने अर्पित किए श्रद्धासुमन

- विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई दादी प्रकाशमणि की 15वीं पुण्यतिथि
- ब्रह्ममुहूर्त में 3 बजे से दादीजी की याद में की विशेष योग-तपस्या

प्रकाश स्तंभ पर पुष्पांजली अर्पित करते हुए वरिष्ठ दादियां, दीदी व वरिष्ठ भाई।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की 15वीं पुण्यतिथि विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। देशभर से आबू रोड शांतिवन पहुंचे पांच हजार से अधिक लोगों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। दादीजी की याद में गांव से लेकर शहरों में भोग लगाया गया और ब्रह्माभोजन आयोजित किया गया। मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने श्रद्धासुमन अर्पित कर दादीजी के संग के अपने अनुभव सांझा किए। श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए दादीजी की निजी सचिव रहीं व संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी बहन ने कहा कि दादी जी की शिक्षाओं और प्रेरणाओं से आज इतने बड़े ईश्वरीय परिवार का कुशल संचालन कर पाती हूं। दादीजी के जीवन की तीन मुख्य शिक्षाएं थीं- निमित्त, निर्माण और निर्मल वाणी जिसे अपने जीवन में फॉलो करने के साथ बीके भाई-बहनों के जीवन में धारण करा सकूं। महासचिव बीके निर्वैर भाई ने कहा कि दादी भाई-बहनों को अपना परिवार का सदस्य मानते हुए उसी तरह संभाल करतीं थीं। उनका सरल व्यवहार, मधुर वाणी और निमित्त भाव ही था कि वह एक-एक भाई-बहन से हालचाल पूछतीं और उनके साथ भोजन करती थीं। मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, बीके सूरज भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष और बीके शशि, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय सहित वरिष्ठ भाई-बहनें मौजूद रहे।

महासम्मेलन ] देशभर से पधारे 1500 से अधिक पत्रकारों ने लिया संकल्प, बोले- अपनी कलम से सकारात्मक खबरों को देंगे बढ़ावा

# आध्यात्म के समावेश से साकार होगी समृद्ध भारत की तस्वीर

## चार दिवसीय 26वां राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन आयोजित

### अपने शब्दों, वाणी से समाज को पॉजीटिव एनर्जी देंगे

स्वर्णिम भारत अर्थात् सतयुगी भारत। सतयुगी भारत अर्थात् सतयुगी संस्कार। संस्कारों से ही संसार बनता है। यदि हम सभी तैयार हैं कि सतयुगी संसार बनाएंगे। सारी दुनिया कह रही है कि भारत विश्व गुरु बनेगा। भारत के पास ही वह विधि है जिससे स्वर्णिम दुनिया बनाई जा सकती है। वह विधि है हमारे सतयुगी संस्कार, जिससे सतयुगी भारत बनता है। सभी मीडिया के भाई-बहन सबसे पहले स्व परिवर्तन करें। अपनी आंतरिक स्थिति की चैकिंग करें। यदि हमें सारा दिन, 18 घंटे खुशी, संतुष्टता और प्रसन्नता के साथ काम करना है तो रोज सुबह आधा घंटा अपनी आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज जरूर करें। आज हम सारा दिन शरीर के लिए तो सब कर रहे। भोजन, व्यायाम आदि लेकिन जो शरीर को चलाने वाली दिव्य शक्ति है, ऊर्जा है उसका ही ध्यान नहीं रखते हैं। आपके एक शब्द से लाखों लोगों की मानसिक स्थिति बढ़ जाती है और नीचे आ जाती है। इसलिए सभी यहां से संकल्प लेकर जाएं कि अपने शब्दों और वाणी से समाज को पॉजीटिव एनर्जी देंगे।

■ **बीके शिवानी दीदी,** अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर, गुरुग्राम

### मीडिया समस्या के साथ उचित समाधान भी पेश करे

मास मीडिया से अपेक्षा है कि समाज की जटिल समस्याओं के समाधान के लिए पहल करें। एक पत्रकार समाज का जिम्मेदार नागरिक होता है। मीडिया को लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन, सामाजिक समस्याओं को उजागर करने की जरूरत है। मेरा मीडिया के साथियों से आह्वान है कि समस्या के साथ समस्याओं का उचित समाधान भी समाज के समक्ष पेश करें। गायों में अभी राजस्थान में लंपी वायरस की बीमारी फैल रही है आप उसके लिए भी कुछ सामाजिक कार्य करें। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आकर अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है। आध्यात्म का यह मार्ग आज लोगों में बदलाव का केंद्रबिंदु बन गया है। यहां से जुड़कर और आध्यात्मिक ज्ञान लेकर आज लाखों लोगों का जीवन पूरी तरह से बदल गया है। उनका जीवन आनंदमय हो गया है।

■ **महेंद्र चौधरी,** प्रभारी मंत्री, सिरोही

### निमित्त-निर्माण भाव से समाज को दिशा दें

परमात्मा के घर में देशभर से पधारे सभी मीडिया के भाई-बहनों का स्वागत है। सभी को ईश्वरीय और परमात्म संदेश देने के संदेशवाहक आप सभी मीडिया के भाई-बहनें हैं। निमित्त और निर्माण भाव से समाज को नई दिशा देने की सेवा करते रहें।

■ **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

» **शिव आमंत्रण, आबू रोड।** हम संकल्प लेते हैं कि यहां से जाकर अपनी लेखनी के माध्यम से सकारात्मक खबरों को बढ़ावा देंगे। पत्रकारिता में आध्यात्म के समावेश से ही समृद्ध भारत की तस्वीर बनेगी। इस संकल्प के साथ चार दिवसीय 26वीं राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का समापन हुआ। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में समाधान परक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर विषय पर आयोजित किया गया। समापन सत्र का विषय समाधान केंद्रित मीडिया- समय की मांग पर रखा गया। इसमें देशभर से 1500 से पधारे अधिक पत्रकारों ने कहा कि हम यहां से जाकर अपने अपने समाचार माध्यम से समाज में आशा जगाने वाली, सकारात्मक खबरों को पेश करेंगे।

### मीडिया की इन शख्सियतों ने भी रखे विचार...

- लखनऊ से पधारे आसना के राष्ट्रीय अध्यक्ष एसएस त्रिपाठी ने कहा कि जीवन में राजयोग मेडिटेशन अपनाने, सीखने से मेरा पूरा जीवन बदल गया है। जीवन खुशमय हो गया है।
- एयर इंडिया के ऑथर जितेंद्र भार्गव ने कहा कि अगर देश को सही मायने में स्वर्णिम भारत बनाना है तो मीडिया को सच्चाई दिखानी पड़ेगी। निर्भयता के साथ सच्चाई से रुबरु कराना होगा।
- लखनऊ से पधारीं प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की मेंबर आरती त्रिपाठी ने कहा कि यदि हमें इस धरा पर स्वर्णयुग लाना है तो मीडिया को आगे आना होगा। निःस्वार्थ, निर्भीक और ईमानदारी के साथ पत्रकारिता करेंगे तो वह समाज को नई दिशा देगा।
- पुणे से पधारीं एसएमएस प्रोडक्शन की डायरेक्टर सुपर्णा गंगवाल ने कहा कि सभी मीडियाकर्मी यहां से सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने का संकल्प लेकर जाएं।
- दिल्ली से पधारे इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के राजीव कुमार निशाना ने कहा कि जब आप मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता करते हैं तो समस्याएं तो सामने आती हैं लेकिन दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े तो सफलता जरूर मिलती है।
- अभिनेत्री रीमा सरीन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आने के बाद मेरा जीवन बदल गया। मैं रोज राजयोगा और मुरली फॉलो करती हूं। आज युवा और मीडिया के लिए सकारात्मक होना बहुत जरूरी है। आध्यात्म से जीवन सकारात्मक बनता है।
- नेपाल, काठमांडु से पधारे फ्रीलांस जर्नलिस्ट हरीहर बिराही ने कहा कि यह बहुत बड़ा चिंतन का विषय है कि मीडिया की दशा और दिशा क्या होना चाहिए और आज क्या हो रहा है।
- रायपुर से पधारे केटी यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति मानसिंह परमार ने कहा कि यहां आकर नई ऊर्जा मिलती है। मूल्यनिष्ठ मीडिया ही समाज को नई दिशा दे सकता है।
- बैंगलुरु से एमरीटस के संस्थापक एमबी जयराम, सागर से आए डॉ. हरिसिंह गौर विवि के प्रो. डॉ. के. कृष्णा राव, दैनिक भास्कर सागर के संपादक राजेंद्र दुबे ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

### इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी व न्यूयॉर्क से राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, मल्टीमीडिया निदेशक बीके करुणा, विंग उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके शांतनु, बीके सुशांत व बीके निकुंज, पीआरओ बीके कोमल, ज्यूरिस्ट विंग की उपाध्यक्ष बीके पुष्पा, एक्टर गुंजर उतरेजा, हैडक्वार्टर को-ऑर्डिनेटर बीके चंदा, भजन गायक ओम व्यास, जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नाथुमल, सिद्धपुर से सबजोन को-ऑर्डिनेटर बीके विजया, जयपुर से जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके चंद्रकला, मुंबई के जोनल कॉर्डिनेटर बीके संजय, कवि डॉ. कनुभाई, रेडियो सरगम इंदौर के मैनेजिंग डायरेक्टर आशीष गुप्ता ने भी विचार व्यक्त किए।

### गलत सूचनाएं रोकने मीडिया साक्षरता शिक्षा शुरू की

आज 99 फीसदी खबरें सोशल मीडिया से आ रही हैं। इससे बड़ा झंझावत पैदा हो गया है। समाज और सरकार दोनों पशोपेश में हैं कि किस खबर को सही मानें और किसे नहीं। इतने सारे यूट्यूब और मीडिया हो गए हैं कि कोई भी खबर प्रोसेस होकर नहीं पहुंच रही है। सिर्फ सूचना ही पाठकों-दर्शकों तक पहुंच रही है। पहले हर खबर समाज तक एक प्रोसेस के तहत पहुंचती थी। सोशल मीडिया पर जो लिखा जा रहा है और सूचना दी जा रही है उसे भी मुख्य धारा के पत्रकारों का काम समझा जा रहा है जबकि दोनों अलग हैं। खबर और समाचार वह है जो आपको प्रोसेस करके दिया जा रहा है। खबर जब लिखी जाएगी तो उसे कोई एडिटर या पत्रकार ही बनाएगा जबकि सूचना कोई भी दे सकता है। सोशल मीडिया पर जो लिखा जा रहा है उसे पत्रकारों का अपराध न माना जाए। हमें संभल पर सूचनाएं प्राप्त करने होंगी। इन परिस्थितियों को देखते हुए हमने मीडिया साक्षरता शिक्षा अभियान शुरू किया है।

■ **प्रो. संजय द्विवेदी,** महानिदेशक, आईआईएमसी, दिल्ली

### न्यूज को शालीनता और सभ्यता से पेश करें

शब्द की अपनी ताकत होती है। एक पत्रकार के ऊपर निर्भर करता है कि आप शब्दों को किस तरह चुनते हैं, कैसे प्रस्तुत करते हैं। इससे तय होता है कि उस समाचार का समाज पर क्या इफेक्ट होगा। जो समाज में घटित हो रहा है जो तथ्य हैं उसे ज्यों का त्यों खबर के माध्यम से पाठकों के समक्ष परोसा जाए। तथ्यों को तोड़ा- मरोड़ा नहीं जाए।

■ **प्रो. ओमप्रकाश देवल,** डायरेक्टर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया एस्टडीज, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली

### जीवन के प्रति रखें सकारात्मक दृष्टिकोण

जब तक हमारा जीवन मूल्यनिष्ठ नहीं होगा हम भारत को स्वर्णयुग नहीं बना सकते हैं। मैं आईएएस, आईपीएस जैसे 13 से अधिक टेस्ट में फेल हुआ। मेरा सपना था कि जेएनयू से पढ़ाई करुं लेकिन पूरा नहीं हो पाया, न ही आईएएस बन पाया। फिर मैंने कुछ करने की ठानी। इसके बाद पीएचडी की। आईएएस नहीं बन सका लेकिन आज आईएएस-आईपीएस अफसरों को ट्रेनिंग देता हूं। जिस जेएनयू में पढ़ने का सपना था, आज वहां क्लास लेता हूं। यह सब संभव हुआ जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने से। जब हम अपने विचारों को पॉजीटिव बनाते हैं तो हमारी एनर्जी बढ़ती है, आगे बढ़ने के लिए ऊर्जा मिलती है।

■ **डॉ. राजीव कुमार सिंह,** सीनियर जर्नलिस्ट व ट्रेनर, पटना

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

# एकाग्रता से योग करेंगे तो ही मिलेगी सिद्धी

तीसरा भाग्य हैं निश्चिंत जीवन। कमाने की चिंता नहीं, खाने की फिक्र नहीं है, बीमार हो गए तो डॉक्टर हॉस्पिटल में हैं कोई चिंता नहीं, कितना पैसा खर्च होगा होगा या नहीं साथ में सुप्रीम सर्जन भी काम कर रहा है। भगवान के घर में उसके कार्यों में लग गए हम उसके मददगार बन गए, जिसने हमें जन्म-जन्म मदद की। अब हम उसके मददगार बन गए। आप सभी ने ये बात सुनी होगी विष्णु को भगवान मानते हैं, उसको कहीं कुछ कार्य कराना है तो शक्तियों का आह्वान करते हैं जाओ यह कार्य करना है। बाबा ने भी हम सबका आह्वान किया। अब मुझे इस संसार को स्वर्ग बनाना है आ जाओ। रूहों की दुनिया में रुहों से रूहरिहान करो, रूह देखो सबको उनका आह्वान करो और ये सब होगा एकाग्रता की शक्ति से। अगर तुम योग में लंबे समय से एकाग्रता के अनुभव में रहे हो तो तुम्हारे अंदर इतनी शक्ति आ जाएगी कि जिनका आह्वान करेंगे उनको पाएंगे।

चौथा भाग्य हैं भगवान हमारा सर्व संबंधी बन गया और हमारे लिए एक तो भविष्य की स्वर्ग की सौगात और इस समय सर्व खजाने और सर्व शक्तियां सब कुछ हमारे लिए लेकर आए हैं। उन्होंने कहा कह ही दिया मेरा सबकुछ तुम बच्चों के लिए है। ये बहुत बड़ा भाग्य हो गया ना हमारा, वरदान मिल रहे हैं। हमारा प्रभु मिलन उठते ही रोज सवेरे होता है। बाबा ने हम सबको कितना सुंदर लक्ष्य दे दिया है। योगाभ्यास कितना सुंदर सिखा दिया है। इसके द्वारा तुम अपने भाग्य को श्रेष्ठ बनाते चलो। हमें चिंतन करना है भाग्य बहुत हैं हमारे पास। सवेरे भगवान की मुरली सुनते हैं, वरदान लेते हैं। आप देखो अपने अनुभवों को कितना सुख मिलता है। किसी ने आधा घंटा, किसी ने एक घंटा योग किया। आत्म सुखी हुई ना, ये सुख कहा है इस संसार में। बहुत भाग्यवान हैं हम सभी आत्माएं। आंख खुलते ही भगवान मिलते हैं, सोते हैं तो भगवान सुलाते हैं। भगवान ही सुबह उठाने आते हैं फिर पढ़ाने आते हैं। ब्रह्मा भोजन खिलाते हैं, रात को सुलाने आते हैं।

## हमें अपने भाग्य को सर्वश्रेष्ठ बनाना है

संसार की सभी इच्छाएं छोड़ देना, अपने लिए कुछ भी न चाहना, सब कुछ सेवाओं में लगा देना ये छोटी बात नहीं है। तो पूरा कल्प हम बहुत भाग्यवान रहे हैं। हमें अपने भाग्य को सर्वश्रेष्ठ बनाना है। अगर बहुतों की दुआएं इकट्ठी की है, दुआएं दीं भी हैं और ली भी हैं तो भक्ति में तुम्हारे चित्रों से सबको दुआएं मिलेंगी। यदि सर्वशक्तियां जमा की हैं तो अनेक बार राज्य मिलेगी। अपने को गुणवान बनाया हैं तो जन्म-जन्म संबंधों में सुख मिलेगा। अगर एक के प्यार में अपने को मगन किया है तो जन्म-जन्म संबंधों में प्यार मिलेगा। पहला भाग्य हमारा बनता है रोज सवेरे। सभी अच्छा अभ्यास करेंगे। सूक्ष्मलोक में जाकर बाबा से दृष्टि लेंगे, अभ्यास करेंगे बाबा ने अपना हाथ मेरे सिर पर रख दिया और स्मृति दिलाई बच्चे तुम पद्मापद्म भाग्यशाली हो। स्मृतियों से भाग्य जगता है। संकल्प की एनर्जी ही भाग्य की एनर्जी हैं। जितनी संकल्प की शक्ति हम जमा करेंगे, उतना ही भाग्य श्रेष्ठ बनता जाएगा। परमधाम में जब हम सभी आत्माएं रहती हैं, हम सभी संपूर्ण हैं, लेकिन संपूर्णता की डिग्री सबकी अलग-अलग है। हर एक अपनी डिग्री अपनी योग्यता अनुसार पार्ट लिया है इस विश्व की ड्रामा में। हम सभी हीरो एक्टर हैं। सवेरे उठकर हम ये याद करेंगे। भाग्य की दूसरी पहचान होती है श्रेष्ठ बुद्धि का होना। जिसके पास बुद्धि बहुत अच्छी है वो बहुत भाग्यवान है। ये ज्ञान हमारी बुद्धि का निर्माण करता है। ज्ञान का चिंतन हम जितना करेंगे, ज्ञान को जितना हम अपना विवेक बनाएंगे उतनी हमारी बुद्धि डिवाइन रिफाइन होती जाएगी। ये बुद्धि जन्म-जन्म हमारे साथ चलेगी। बाबा बहुत ज़्यादा महत्व देते हैं पढ़ाई को। ज्ञान का चिंतन हमें चिंताओं से भी मुक्त करेगा। हमारे विचारों को भी महान करेगा, हमारी श्रेष्ठ बुद्धि का निर्माण भी करता है। मुरली का चिंतन परम आवश्यक है।

# सहन शक्ति के साथ समाने की शक्ति जरूरी

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

**शिव शक्तियों की भुजाएं मदद का प्रतीक है। बड़ा से बड़ा कार्य संपन्न एकता से संभव है**

व्यवहार में जब हमें भी कुछ सहन करना पड़ता है तो हमें यही विश्लेषण करना है कि उस व्यक्ति को हमसे कौन सी अच्छाई का फल चाहिए। जब हम अपने अंदर यह सकारात्मक भाव विकसित करेंगे तब उसे सहन करना महसूस नहीं होगा। गुस्सा नहीं आएगा लेकिन स्नेह-प्यार से उसे क्षमा कर सकेंगे। व्यक्ति में जब सहन करने का भाव आ जाता है तो स्वयं में अथाह शक्ति आ जाती है, इसलिए इसे सहनशक्ति कहा जाता है। दुनिया में हर महान व्यक्ति के जीवन में देखें तो इसी शक्ति ने उसे महान बनाया है। चाहे महात्मा गांधी हो , क्राईस्ट, रामकृष्ण परमहंस, भक्त नामदेव हों या कोई भी हों। जिस तरह एक मूर्तिकार जब मूर्ति बनाता है तो एक-एक हथौड़ा और छैनी को सहन करके ही पत्थर पूजनीय मूर्ति बनती है और मंदिर में प्रतिष्ठित होती है। तब उन पर फूल-हार चढ़ाए जाते हैं। कहने का भाव यह है कि सहन करने वाले ही अनेकों के मान-सम्मान को प्राप्त करने के पात्र बन जाते हैं।

2. **समाने की शक्ति** को विकसित करने के लिए गंभीरता एवं हृदय की विशालता का गुण चाहिए। जिसमें हम ईर्ष्या रूपी दुर्जय शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। सहनशक्ति के साथ दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति है समाने की शक्ति। वास्तव में यह समाने की शक्ति सहनशक्ति की ही पूरक है क्योंकि उसके बिना सहनशक्ति का कोई मूल्य नहीं होता है। कई बार कई लोग सहन तो कर लेते, यह उनकी महानता है लेकिन वह बात स्वयं में समां नहीं सकते तो भी जीवन में कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर-''जैसे किसी घर में सास-बहू होती हैं। एक ने कहा दूसरे ने माना उसका नाम है ज्ञानी। परन्तु यदि कभी सास ने बहू को कुछ खरी खोटी सुना दी और बहू ने सहन कर लिया, यह उसकी महानता है लेकिन वह अपने दिल में उन बातों को समां नहीं सकी और पड़ोस में जाकर उसने अपनी सास की बातों के बारे में सुना दिया। साथ ही यह भी बताया कि उसे कितना सहन करना पड़ता है। अब वह बहू तो अपना सारा मन का बोझ हल्का करके चली गई। परन्तु जैसे वह बाहर गई तब मौका देखकर पड़ोसी उसकी सास को सलाह देने जाते हैं और बड़ी सहानुभूति के साथ सास को समझाने लगते हैं कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। तब सास को आश्चर्य होता है कि पड़ोसी को कैसे पता चला। वह उन्हें पूछती है कि उन्हें कैसे पता कि क्या हुआ था, तब वही पड़ोसी कहते हैं कि उनकी बहू ने आकर अपना दिल हल्का किया और उन्होंने उसे भी समझाया है। अब पड़ोसी तो सलाह देकर चले गए। उस सास ने उस वक्त कुछ कहा नहीं, परंतु जैसे ही बहू घर में आती है तो वह उस बात को लेकर बहू पर बरस पड़ती है और घर में फिर एक तमाशा खड़ा हो जाता है। बहू ने सहन किया था वह उसकी महानता थी, परन्तु वह समां नहीं सकी इसलिए आग में घी डालने जैसे हो गया।

कहने का भाव है कि सहन करने के साथ-साथ हर बात को समाना भी बहुत-बहुत आवश्यक है। अन्यथा संबंधों को सुधार नहीं रखा जा सकता। यह हमारे पारिवारिक जीवन में कलह-कलेश का कारण बन जाता है। जैसे घर में मां अपने बच्चे की गलतियों को सबसे छिपाती है और समां लेती। **क्रमशः**

# हमारी स्थिति सदा हो अचल और अडोल

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

**दिनभर परमात्मा से संवाद रहे जारी, रोज करें अपनी चेकिंग**

मेरी अवस्था और व्यवस्था आज सारे दिन भर कैसी रही? स्थिति कैसी हो ऐसी अचल, क्योंकि कहने वाले तो कुछ ना कुछ कहेंगे जरूर, कोई कुछ कहेगा, कोई कुछ कहेगा। सागर तो अपने मस्ती में मगन हैं। लहरें आ रही हैं, लहरें जा रही है जो लिखना है लिखो, सागर की विराट लहर आएगी और वो सब कुछ मिटाकर चली जाएगी। सागर कि संतान सागर समान। तो स्थिति कैसी हो सागर समान बाप समान अचल अडोल। हिलें नहीं, छोटी-छोटी बातों से घबराए नहीं, उसने ऐसा क्यों किया, इसने ऐसा क्यों किया, यह ऐसा व्यवहार क्यों करते, इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। बाबा ने कहा बाप को ये भाषा पसंद नहीं। वस्तुएं हमारी स्थिति से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। वस्तु आएगी और जाएगी, व्यक्ति भी शायद आएंगे और जाएंगे लेकिन हमारी स्थिति हमारे साथ रहेगी इसलिए स्थिति को ऊंचा रखना है।

बाबा जो कहते हैं जांच करो वो राइट हैं या रांग है। ऐसे ही स्वीकार नहीं करना है। मुरलियों में कई बार आया है ये अंधश्रद्धा की ज्ञान नहीं है। बस बाबा ने कह दिया और मान लिया। नहीं बाबा ने कहा जज करो जो मैं सुनाता हूं वो राइट है। यह दुनिया वाले जो सुनाते हैं वो राइट है, बुद्धि लगाओ हर चीज का तर्क करो। वो शक की अवस्था हम पार कर चुके हैं। यहां शक के लिए तर्क नहीं कर रहे हैं। यहां ज्ञान को समझने के लिए तर्क किया जा रहा है। बाबा के शब्दों में राज समाए हुए हैं। इसके लिए चिंतन की अति आवश्यकता है। ये विचार निरंतर बुद्धि में चलनी चाहिए, क्या मिला मुझे इससे, प्राप्ति क्या हुआ। हर दिन सोने से पहले बैठकर अपने किए हुए कर्मों को देखना है इसका परिणाम क्या निकला। ज्ञानरत्नों का दान कितनों को दिया। सारे दिनभर अविनाशी जो खजाना मिला है कितनों को दिया। ज्ञानदान करते रहना है, ज्ञान देते रहना। ज्ञानदान में जो खुशी है शायद संसार में और कोई भी स्थूल धन में वो खुशी नहीं है। मनसा से शक्तियों का दान, वानी से ज्ञान का दान, कर्मों से गुणों का दान देते रहना है। मदद करना सहयोग देना ज्ञान का दान करना।

## दुःख देंगे तो दुखी होकर मरेंगे...

बाबा ने कहा गाजी नहीं बनना है तुमको, दूसरों को दुःख तो नहीं दिया। किसी को दुःख देना, षड्यंत्र करना, कपट करना। दुःख देंगे तो दुःखी होकर मरेंगे। किसी एक देश का राजा अत्यंत क्रूर प्रवृत्ति का था, बहुत तानाशाह, लोग त्रस्त थे, दुःखी थे। अचानक एक दिन राजा का व्यवहार ही बदल गया और सबसे बहुत अच्छे से बातें करने लगा। लोगों को आश्चर्य हुआ ये क्या हुआ परंतु किसी को पूछने की हिम्मत नहीं हुई और अचानक रंग बदल दिया। कुछ हिम्मत करने के बाद कुछ समय के बाद एक मंत्री ने पूछा कि ये जो परिवर्तन आया कैसा, तो राजा ने कहा ये परिवर्तन मुझमें आया। मैं मानता हूं और उसका एक कारण है। मैं अपने राज्य से घूम रहा था देखा एक कुत्ता एक लोमड़ी का पीछा कर रहा है और उस लोमड़ी का पैर उसने पकड़ा और लोमड़ी तो चली गई नीचे परंतु पैर को घायल कर दिया। हमेशा के लिए उसको अपाहिज बना दिया। मैं उसके पीछे-पीछे गया एक व्यक्ति खड़ा था। उसने पत्थर उठाया और जोर से उस कुत्ते को मारा, उसका पैर टूट गया। वह आगे बढ़ा, आगे बढ़ते ही घोड़े पर चढ़ा घोड़े ने एक लात मारी उस व्यक्ति का पैर टूट गया। घोड़ा आगे बढ़ा और गिर गया ये सारा कर्म देखने के बाद मुझे पता चला कि मैं ये सब जो कर रहा हूं ये सब मेरी तरफ वापस आएगा। इसलिए मैंने उस दिन सोच लिया कि बस अब बहुत हो गया, अब सत्कर्म करना है। जैसे ही राजा ये सब सुना रहा था वो जो मंत्री था अंदर ही अंदर कह रहा था राजा तो अब बदल गया है। अब मेरे पास अवसर है, इस राजा के विरुद्ध कुछ कर दूं और मैं राजा बन जाऊं। जैसे ही मंत्री जाने लगता है, गिरता है और उसकी टांग टूट जाती है। हमें चेक करना है सारे दिनभर गाजी तो नहीं बने। किसी को दुख तो नहीं दिया। षड्यंत्र तो नहीं रचा। योजनाएं तो नहीं बना रहे। जो गड्ढे हम दूसरों के लिए खोदेंगे, उसमें हम एक दिन खुद गिरेंगे।

# राजयोग ध्यान से बाहरी परिस्थितियों का प्रभाव मन पर नहीं पड़ता है: बीके आदर्श

शिव आमंत्रण, ग्वालियर/मप्र। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के न्यायविद प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत की स्थापना में न्यायविदों की भूमिका विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। वरिष्ठ अधिवक्ता आरसी बंसल ने कहा कि हम सब एडवोकेट को सत्य का साथ देने का सदैव प्रयास करना चाहिए। सेवाकेंद्र संचालिका बीके आदर्श ने कहा कि घर परिवार में रहते हुए एवं अपने कार्य स्थल पर कार्य को करते हुए सुख शांति की अनुभूति हो उसके लिए हमें सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। राजयोग ध्यान सबसे अच्छा उपाय है बाहर की परिस्थिति का प्रभाव मुझ पर न परे। हमें आन्तरिक गुणों और शक्तियों से मजबूत होने के लिए अपने लिए थोडा समय निकलना चाहिए। संचालन बीके प्रहलाद ने किया। आभार बीके गुप्ता ने माना। इस मौके पर पूर्व शासकीय अधिवक्ता पीडी अग्रवाल, वरिष्ठ अधिवक्ता आरसी बंसल, बीके गुप्ता, सीनियर एडवोकेट महेश हासवानी, हाई कोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व सहसचिव एडवोकेट चैन सिंह राजपूत सहित अन्य अधिवक्तागण मौजूद रहे।

# समाज को मूल्यनिष्ठ बनाना सबसे बड़ी समाजसेवा है: भगत

- आध्यात्मिक जीवन, मूल्यनिष्ठ समाज विषय पर चार दिवसीय समाज सेवा प्रभाग की ओर से राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जो सेवा का कार्य कर रहा है वह प्रभु के दरबार में सबसे आगे है। ब्रह्माकुमारीज जैसी सेवा और ज्ञान कहीं नहीं मिल सकती है। यह ज्ञान दुनिया में और कहीं नहीं दिया जा रहा है। यहां शिक्षा दी जाती है कि सबकुछ ईश्वर पर छोड़ दीजिए। हम सभी को निमित्त मात्र हैं। समाज को मूल्यनिष्ठ बनाना सबसे बड़ी समाजसेवा है। उक्त उद्गार दिल्ली से पधारे संत हरिदयाल एजुकेशन सोसाइटी एंव अनाथ कल्याण समिति के संस्थापक गिरिधर प्रसाद भगत ने व्यक्त किए। मौका था समाज सेवा प्रभाग की ओर से चार दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार एवं राजयोग शिविर का। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन में आयोजित शिविर में भारत सहित नेपाल से 500 से अधिक समाजसेवा से जुड़े समाजसेवी, संगठनों के पदाधिकारी, बाल कल्याण समिति के पधाधिकारियों ने भाग लिया। इंदौर से बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष पल्लवी पोरवाल ने कहा कि आज बच्चों के साथ बड़ों के लिए आध्यात्मिक शिक्षा बहुत जरूरी है। क्योंकि आध्यात्म से ही बच्चों में मूल्यनिष्ठता का निर्माण होगा। यहां सभी साधारण हों या वीआईपी अपने बर्तन खुद साफ करते हैं। यह छोटी-छोटी बातें सीखकर अपने घरों में भी इसे फॉलो करना चाहिए। भोपाल से रोटरी क्लब के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर जिनेंद्र जैन, प्रभाग की अध्यक्षा बीके संतोष दीदी, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके अवतार भाई, एडि. नेशनल को- ऑर्डिनेटर बीके वंदना, गुलबर्गा की शिवलीला, उपाध्यक्ष गुलबर्गा के बीके प्रेम भाई, कानपुर दिल्ली की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके आशा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

# भारत को सुपर पावर बनाने में किसानों का है अहम रोल: बीके सरला

शिव आमंत्रण, दिल्ली/मजलिस पार्क। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की ओर से आत्मनिर्भर किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ठाकुर किरनपाल सिंह ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम किसानों के लिए बहुत उपयोगी हैं। प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके सरला ने कहा कि आत्मनिर्भरता और मनोबल के लिए आध्यात्मिकता जरूरी है। जिला अधिकारी शर्मिला राठी, सरपंच और रिटायर्ड कमिश्नर (उत्तरी रेलवे) कुलदीप दहिया, प्रभाग की कॉर्डिनेटर बीके राजकुमारी, कॉर्डिनेटर जयप्रकाश, बीके सुनीता ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

# नैतिक मूल्य बिना वर्तमान शिक्षा अधूरी

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षाविद सेवा प्रभाग द्वारा शान्ति सरोवर में शिक्षक दिवस पर परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्व विद्यालय भिलाई के कुलपति डॉ. एमके वर्मा ने कहा कि नैतिक शिक्षा को शामिल किए बिना आज की शिक्षा अधूरी है। मूल्य आधारित शिक्षा की बहुत अधिक आवश्यकता है। शिक्षा में समग्रता का अभाव है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी भिलाई) के डायरेक्टर रजत मूना, ट्रीपल आईटी के रजिस्ट्रार लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजेश मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला, बीके दीक्षा ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन राजयोग शिक्षिका बीके रश्मि ने किया।

# शिक्षक देश की दिशा और दशा बदल सकते हैं: बीके आशा दीदी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम/हरियाणा। ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में निदेशिका बीके आशा ने कहा कि शिक्षक देश के भविष्य के निर्माता हैं। शिक्षक एक ऐसी आधारशिला हैं, जो देश की दिशा और दशा बदल सकते हैं। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा में मूल्यों के समावेश से ही सामाजिक बदलाव संभव है। मात-पिता के बाद शिक्षक ही बच्चों में अच्छे संस्कार दे सकता है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुनैना ने राजयोग का अभ्यास कराया।

# सीनियर पुलिसकर्मियों को सिखाया राजयोग

शिव आमंत्रण, अलीराजपुर/मप्र। विश्व बंधुत्व दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रसाशिका दादी प्रकाशमणि को श्रद्धांजलि अर्पित कर सीनियर पुलिसकर्मियों ने उनकी याद में पौधारोपण किया। इस दौरान सेवाकेंद्र प्रभारी बीके माधुरी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन कराया।

# राजयोग मेडिटेशन से व्यसन से मुक्ति संभव

शिव आमंत्रण, बड़गांव (मुलुंड)/महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारी के बड़गाव मुलुंड सबजोन द्वारा स्माइल नशा मुक्ति केंद्र के सभागार में व्यसन वा नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। बीके कल्पना ने बताया कि कैसे राजयोग मेडिटेशन से उस पर कैसे जीत पा सकते है। साथ ही सभी को दृढ़ प्रतिज्ञा भी कराई कि आज से व्यसनों और नशे का त्याग करेंगे। शुद्ध जीवनशैली अपनाएंगे।

# शिक्षा में संस्कार का समन्वय ही स्वर्णिम भारत का आधार

शिव आमंत्रण, जबलपुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन नेपियर टाउन सेवाकेंद्र द्वारा शिक्षक दिवस पर सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें जबलपुर मेडिकल यूनिवर्सिटी के असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार डॉ. पुष्पराज बघेल ने कहा कि आज शिक्षा का प्रचार-प्रसार चारों ओर है, लेकिन शिक्षा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग बहुत कम दिखाई दे रहा है, आवश्यकता है उस शिक्षा को अपने जीवन में चरित्र के रूप में धारण करने की। डीईओ सुधीर उपाध्याय ने कहा कि हमारी पारंपरिक शिक्षा ही आत्मा को परमात्मा से जोकर उनमें संस्कारों के बीजारोपण का आधार है। प्रो. बलिराम अहिरवार ने कहा कि शिक्षा ही वो शेरनी का दूध है जिसका पान करके अपने कार्य क्षेत्र में सिंह के सामान दहाड़ा जा सकता है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना बहन ने कहा कि श्रेष्ठ संस्कार के आधार पर ही श्रेष्ठ संसार की कल्पना साकार की जा सकती है। कैंसर विशेषज्ञ डॉ. श्याम रावत ने संस्था का परिचय दिया।

# शाश्वत यौगिक खेती बनाएगी किसानों को आत्मनिर्भरः बीके राजू

» शिव आमंत्रण, बैतूल/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्यविधाता भवन में भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान विषय पर किसान सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से आए मुख्य वक्ता कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी बीके राजू ने कहा कि शाश्वत यौगिक खेती को अपनाने से किसान आत्मनिर्भर बनेंगे। अन्न का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव तन पर होता है। अगर तन-मन को स्वस्थ रखना है तो हमें प्राकृतिक तरीके की शाश्वत यौगिक खेती को अपनाना होगा। कोल्हापुर से पधारे बीके बाला साहब ने शाश्वत यौगिक खेती के अपने प्रयोगों के अनुभव सांझा किए। बैतूल हरदा क्षेत्र के सांसद डीडी उईके ने कहा कि किसानों के खेती की पारंपरिक पद्धति को अपनाना है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, कृषि वैज्ञानिक विजय वर्मा, लायंस क्लब बैतूल के अध्यक्ष प्रताप देशमुख, बीके बीके रेखा, बीके मंजू, बीके सुनीता, बीके नंदकिशोर मुख्य रूप से उपस्थित थे।

## ज्ञान की कमी से बढ़ रहे अपराधः बीके रंजू

» शिव आमंत्रण, मधेपुरा/बिहार। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से मंडल कारागार में नैतिक शिक्षा विषय पर स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी रंजू ने कहा कि ज्ञान की कमी के कारण वर्तमान समय मानव के अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा, नफरत आदि राक्षसी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इससे समाज में दिन-प्रतिदिन अपराध बढ़ते जा रहे हैं। यदि हमने अपनी सभ्यता, संस्कार, परंपराएं, सत्संग के माध्यम से फैलाई नहीं तो इस समाज में चलना, रहना, बैठना, उठना जीना बड़ा कठिन महसूस होगा। राजद की महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश महासचिव रागिनी रानी डॉली, सिमराही राधोपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बबीता, जेल अधीक्षक अमर शक्ति, जेलर अमर कुमार, बीके किशोर ने भी संबोधित किया। इस मौके पर जमादार भूपेंद्र कुमार, पूर्व प्रमुख विनयवर्धन उर्फ खोखा यादव, समाजसेवी रामकृष्ण यादव, बीके वीणा, बीके किशोर सहित 600 बंदी मौजूद रहे।

## लक्खी मेला में दिया आध्यात्मिक ज्ञान

» शिव आमंत्रण, हाथरस/(उप्र)। जिला प्रशासन निमंत्रण पर ब्रह्माकुमारी सीमा ने ऐतिहासिक लक्खी मेला श्री दाऊजी महाराज हाथरस के मेला पंडाल में पहुंचकर लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान दिया। इस मौके पर राज्य मंत्री बीएल वर्मा, सांसद राजवीर दिलेर, सदर विधायक अंजुला माहौर, सादाबाद विधायक प्रदीप चौधरी, सिकन्दरा के विधायक राणा, जिला पंचायत अध्यक्ष सीमा उपाध्याय, डीएम, एडीएम एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

## पंचायत परिषद के सदस्यों का किया समान

» शिव आमंत्रण, नीमच (रामपुरा)। ब्रह्माकुमारीज़ के रामपुरा शिव शिखर परिसर सेवाकेंद्र द्वारा नपं के सदस्यों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इसमें नीमच सबजोन संचालिका बीके सविता ने सभी को संकल्प दिलाया कि नगर की जनता एवं चुने गए प्रतिनिधि आपसी प्रेम, सद्भावना एवं सहयोग से कार्य करेंगे। एरिया डायरेक्टर बीके सुरेन्द्र ने आत्मज्ञान की महत्ता बताई। नपं अध्यक्ष सीमा जैन सहित अन्य पार्षदों का तिलक व गुलदस्ते भेंट कर सम्मान किया गया। संचालन रामपुरा केन्द्र की प्रभारी बीके महानंदा ने किया।

## तनाव मुक्ति के लिए मेडिटेशन का अभ्यास जरूरी

» शिव आमंत्रण, जावद/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के जावद सेवाकेन्द्र द्वारा नव निर्वाचित नगर परिषद् के सदस्यों का सम्मान किया गया। इसमें मुख्य वक्ता संस्थान की सबजोन संचालिका राजयोगिनी बीके सविता ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से तनाव से मुक्ति मिलती है। एरिया डायरेक्टर बीके सुरेन्द्र जैन ने अपने जीवन में आई अनेक विषम परिस्थितियों व गंभीर बीमारियों में राजयोग मेडिटेशन के प्रयोग से पाई सफलता का विस्तार से अनुभव सुनाया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष सचिन गोखरू, वरिष्ठ एडवोकेट जगदीश शर्मा, डॉ. प्रदीप गिल, समता विद्यालय के जीवन लाल बैरागी, डॉ. ओपी ओझा, चिल्ड्रन एकेडमी के संचालक महेश सोनी, प्राचार्य दीपक सुरागी, नगर परिषद के अध्यक्ष रूपेन्द्र जैन मुख्य रूप से उपस्थित रहे। संचालन बीके दिव्या ने किया।

## बच्चों में आध्यात्मिकता और मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकताः बीके पुष्पा दीदी

» शिव आमंत्रण, नवापारा/राजिम। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के शिक्षा प्रभाग द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी पुष्पा दीदी ने कहा कि शिक्षक ही समाज के नव निर्माण की नींव होते हैं। आज बच्चों में आध्यात्मिकता और मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। बीके प्रिया बहन ने कहा कि शिक्षक के हाथ में विद्यार्थियों को चरित्रवान बनाने की कला होती है। इस मौके पर शा. उच्चतर माध्यमिक स्कूल की प्राचार्या संध्या शर्मा, पिपरौद के शाउमावि की प्राचार्य दीपिका सिंह, सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रफुल्ल दुबे किरवई, सेवानिवृत्त प्रधानपाठक जगदीश प्रसाद शर्मा तर्री, राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक संतोष कुमार साहू, लेखापाल नीलकंठ साहू मौजूद रहे। इस दौरान सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

## विश्व का सबसे बड़ा अभियंता है परमात्मा

» शिव आमंत्रण, सतना (पतेरी)/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ की पतेरी शाखा द्वारा इंजीनियर दिवस पर युवा इंजीनियरों का सम्मान किया गया। पतेरी सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी शशी दीदी ने विश्व निर्माण में इंजीनियर के योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दुनिया का सबसे विशेष इंजीनियरिंग उत्पाद मानव शरीर है। जब आप आत्मा का अनुभव करेंगे तभी आप सेल्फ इंजीनियरिंग को समझेंगे। विश्व का सबसे बड़ा इंजीनियर तो भगवान है। आज हमें अपने आप को ईश्वर से जोड़ने की आवश्यकता है। यही सेल्फ इंजीनियरिंग है। दीपा पाण्डेय, शिवम पाठक, शिवम् मिश्र ,कल्पना चतुर्वेदी, ओम श्रीवास्तव, अदिति व्यास ने भी संबोधित किया।

## खेल में मानसिक स्थिरता जरूरी हैः बीके रीना

» शिव आमंत्रण, छतरपुर/मप्र। राष्ट्रीय खेल दिवस पर मप्र सरकार के खेल विभाग द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ से पहुंची बीके रीना पहुंचीं। उन्होंने कहा कि खेल हमारे अंदर की प्रतिभा को उभारता है, राष्ट्र के गौरव को बढ़ाता है। राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है। खेल के लिए मानसिक स्थिरता का होना बहुत आवश्यक है तभी हम हर परिस्थिति में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। राजयोग मेडिटेशन से एकाग्रता बढ़ती है। जिला शिक्षा अधिकारी हरिश्चंद्र दुबे ने कहा कि हमें किसी भी क्षेत्र मे चरम ऊंचाई तक पहुंचना है तो उसका मूल मंत्र है निरंतर अभ्यास। मौके पर बीके रजनी, महाकौशल प्रांत सह सेवा प्रमुख भालचंद्र नातू, सह विभाग संघ संचालक केंद्र गुरु प्रसाद अवस्थी भी मौजूद रहे।

# सागर सेवाकेंद्र ने निकाली सड़क सुरक्षा बाइक रैली

» शिव आमंत्रण, सागर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा मकरोनिया प्रभाकर नगर स्थित सेवाकेंद्र से शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए सदर बाजार तक सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा मोटर-साइकिल यात्रा निकाली गई। रैली को नगर पालिका अध्यक्ष मिहीलाल भाई, पार्षद विवेक सक्सेना, निरीक्षक प्रभारी अनूप सिंह ठाकुर और सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बिलासपुर से आए बीके सुभाष भाई ने सभी के लिए राजयोग मेडिटेशन को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। इस मौके पर बीके लक्ष्मी, बीके सीता, बीके पार्वती, बीके राजकुमारी, बीके मुकेश, बीके सुनील, बीके पीयूष सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

समर्पण समारोह ] **अलौकिक समर्पण समारोह में पांच हजार लोगों ने लिया भाग**

# दस कुमारियों ने सेवा में समर्पण किया जीवन

» शिव आमंत्रण, नागपुर/महाराष्ट्र। आध्यात्मिक साधना का पथ तलवार की धार के समान होता है, जिसमें कदम-कदम संभल कर चलना होता हैं। त्याग, तपस्या और सेवा के पथ पर, संयम के मार्ग पर चलने का निर्णय चलने का सबसे बड़ा समर्पण है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के जामठा स्थित विश्व शांति सरोवर में आयोजित अलौकिक समर्पण समारोह में दस कुमारियों ने अपना जीवन समाज सेवा और जन कल्याण के लिए अर्पित करने का निर्णय किया।

**इन कुमारियों ने किया समर्पण-**
नागपुर से बीके हर्षाली बहन, बीके गायत्री बहन, बीके त्रिवेणी बहन, बीके आशा बहन, बीके करिश्मा बहन, बीके गायत्री बहन, बीके अंकिता बहन, गोंदिया से बीके सुनीता बहन, वर्धा से बीके तृप्ति बहन और वरठी से बीके हेमा बहन ने परमपिता परमात्मा शिव को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार किया। इस ऐतिहासिक पल के पांच हजार लोग साक्षी बने।

**सदा वफादार बन कर रहना-**
माउंट आबू से पधारीं विशेष अतिथि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी दीदी ने कुमारियों को इस समर्पित जीवन का दृढ़ता से पालन करते हुए, ईश्वरीय मर्यादाओं पर चलने के लिए प्रतिज्ञाएं करवाईं। उन्होंने कहा कि वफादार बन कर रहना है, ईमानदारी से चलना है, सत्यता पर चलना है। सदा जी हुज़ूर का पाठ निभाना है। बड़ों के आज्ञाकारी बनकर चलना है। अपने हर संकल्प, बोल, और आंतरिक ऊर्जा को ईश्वरीय सेवाओं में सफल करना है। सदा खुश रहना है। सदा संतुष्ट रहना है। सबको दुआएं देनी हैं और लेनी हैं। दादी प्रकाशमणि जी ने निमित्त, निर्माण, निर्मल वाणी का मंत्र जीवन में धारण करें तो परिवर्तन हो जाएगा। नागपुर की संचालिका ब्रह्माकुमारी रजनी दीदी ने सभी का स्वागत किया। अहमदाबाद से पधारीं बीके नेहा बहन, बीके शालिनी बहन, मुंबई से डॉ. प्रवीण कुमार जैन. डॉ. मीता मेहता, शिवकिशन अग्रवाल, प्रो. हल्दीराम भुजियावाला अपने परिवार सहित पधारे थे।

## भंडारा में नवनिर्मित शांता दीदी उद्यान का उद्घाटन

» शिव आमंत्रण, भंडारा/महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने सेवाकेंद्र की ओर से नवनिर्मित शांता दीदी उद्यान का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि जब मैं इस ईश्वरीय यज्ञ में आई तो उस समय मेरी उम्र मात्र 16 साल थी। यहां दादी राजयोगिनी प्रकाशमणि जी और राजयोगिनी मनमोहिनी दीदीजी से बहुत कुछ सीखा। इस दौरान उन्होंने दादीजी के जीवन की मुख्य चार बातें बताईं उन्होंने कहा कि दादीजी सदा कहतीं थीं कि सदा ऑलराउंड रहो। अटेंशन से रहो। अलबेलापन से दूर रहो। हर कार्य परफेक्ट से करना। माउंट आबू से गए बीके देव भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र संचालिका बीके रक्षा दीदी, बीके शालू दीदी ने सभी का जोरदार स्वागत किया।

## युवा उठो जगत के वास्ते...

» शिव आमंत्रण, आष्टा/मप्र। सेमिनरी रोड स्थित शांति सरोवर में ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा 'युवा उठो जगत के वास्ते कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सीहोर से आईं बीके पंचशीला दीदी ने कहा कि 'युवा उठो जगत के वास्ते' युवा वह शक्ति है जो सब कुछ कर सकते हैं। अगर हम युवा को उल्टा लिखें तो वायु होता है 'जो कि युवा भी एक वायु की तरह तीव्र होता है' युवा वह है कि जो वायु का भी रुख मोड़ सकता है एवं पानी का भी। युवा वह जिनके तन में जोश, मन में होश एवं बुद्धि में एक नई खोज हो वही एक सशक्त युवा है। सेवाकेंद्र संचालिका बीके कुसुम दीदी, बीके नीलिमा दीदी, समाजसेवी शेष नारायण मुकाती, हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष कालू भट्ट, कुशल पाल लाला, पत्रकार धनंजय जाट, डॉ. विजय कोचर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कलाकार एवं चलित झांकियों का प्रदर्शन करने वाली झांकियों के अध्यक्ष व टीम का भी स्वागत सम्मान किया गया।

# किसी को दिल से माफ कर देना बड़ा पुण्य कर्म है

» शिव आमंत्रण, लुधियाना/पंजाब। ब्रह्माकुमारीज के विश्व शांति सदन सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित सात अरब कर्मों की महायोजना अभियान के अंतर्गत बॉयस गवर्नमेंट कॉलेज में मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अमेरिका, न्यूयॉर्क से आए इंजीनियर बीके रामप्रकाश सिंघल ने कहा कि सात अरब सतकर्मों की योजना अभियान का लक्ष्य विश्व बंधुत्व की भावना को जागृत और मजबूत करना है। आज पूरे विश्व की अबादी लगभग सात अरब है। किसी को दिल से माफ कर देना, अपने से नफरत करने वाले से अपनी खुशी बांटना, कुदरत के प्रति कुछ अच्छा करना, सर्व के प्रति शुभ भावना रखना इत्यादि। पूरे विश्व के लोगों को अच्छाई के एक सूत्र में पिरोना इस अभियान का लक्ष्य है। साथ ही खालसा कॉलेज में भी आंतरिक क्षमता का निर्माण विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया। वहीं डीएमसी नर्सिंग कॉलेज में तनाव को ताकत में बदले विषय पर और गुरु नानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी में तनाव को आंतरिक शक्ति में बदले विषय पर सेमीनार आयोजित किया गया।

## नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

# 'स्वीकारोक्ति'

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। आध्यात्मिक ज्ञान में स्वीकारोक्ति का विशेष महत्व है। आध्यात्म हमें सिखाता है कि जो है, जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार करना। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव, संस्कार, गुण, पसंद-नापसंद, मत और मान्यताएं भिन्न होती हैं। एक न मिले दूजे से। ऐसे में जब हम अपनी पसंद, मान्यता और स्वभाव का मिलान दूसरे के साथ करते हैं तो टकराव की स्थिति बनती है। क्योंकि हमारा मानना होता है कि अमुख व्यक्ति हमारे हिसाब से क्यों नहीं चलता है। मेरी तरह कार्य क्यों नहीं करता है। मेरी तरह पसंद-नापसंद क्यों नहीं है। दूसरे पहलू पर नजर डालें तो प्रत्येक व्यक्ति (आत्मा) अपनेआप में अनोखा, अद्भुत और अलग है। उसका संसार को देखने, समझने, ग्रहण करने, सीखने का अपना नजरिया और दृष्टिकोण है। जब हम किसी के स्वभाव-संस्कार को उसी रूप में स्वीकार करना सीख लेते हैं, उसे अंतर्मन की गहराई से अपना लेते हैं और खुशी-खुशी, साथ-साथ घर, ऑफिस, समाज में चलते हैं तो यहीं से आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

**जिसे आप बदल नहीं सकते उनकी चिंता व्यर्थ है-**
उदाहरण के लिए- आप घर से ऑफिस जा रहे हैं। पहले से ही देरी हो गई है और रास्ता खराब होने से गाड़ी तेज नहीं चला पा रहे हैं, इस पर हम नगर सरकार को कोसने लगते हैं कितना भ्रष्टाचार है, कुछ काम नहीं करते हैं। थोड़ा आगे बढ़ते हैं और सिग्नल बंद मिलता है, फिर झल्लाहट आती है कि आज ही ये सिग्नल बंद मिलना थे। अचानक गाड़ी का टायर पंचर हो जाता है, अब तो गुस्सा बेकाबू हो जाता है। मीटिंग में देरी से पहुंचते हैं और बॉस की डांट सुनकर सारा दिन डिस्टर्ब और खुन्नस भरा। इस घटना के दूसरे पहलू पर नजर डालें तो इन परिस्थितियों में भौतिक स्थितियों से ज्यादा आपके मन की स्थिति महत्वपूर्ण थी। आपको जितना कष्ट और पीड़ा भौतिक कारणों से नहीं हुई उतनी अव्यवस्थित, तनावपूर्ण और नकारात्मक सोच से। क्योंकि सड़क में यदि गड्ढे मिले तो आपके मन की स्थिति खराब करने या कोसने से वह भर नहीं जाएंगे। सिग्नल बंद हैं तो मन को बैचेन करने से वह जल्दी खुल नहीं जाएगा। टायर भी पंचर होने से रोक नहीं सकते हैं। ऐसे में मन को बेवजह अशांत करना, परेशान होना, तनाव लेना, घबराहट हमारी अज्ञानता ही है। इस घटना से सबक जरूर ले सकते हैं कि आगे से ऑफिस के लिए जल्दी निकलूंगा, ताकि समय से पहुंच सकूं। आप गाड़ी चलाते समय मन में यह संकल्प भी कर सकते थे कि मेरे साथ सब अच्छा होगा, कोई बात नहीं आज थोड़ा विलंब हो गया लेकिन कल समय से ऑफिस जाऊंगा। सिग्नल पर गाड़ी में बैठे-बैठे एक मिनट परमात्मा को याद करके शुक्रिया भी अदा कर सकते थे कि प्रभु आपका धन्यवाद! मैं कितना भाग्यशाली हूं कि मुझे एक अच्छी जॉब मिली। हजारों लोग दुनिया में ऐसे भी हैं जो बेरोजगार हैं। सिर ढंकने के लिए छत नहीं और खाने को दो वक्त की रोटी नहीं। ऑफिस पहुंचकर शांत मन से उस परिस्थिति को बेहतर तरीके से हल भी कर सकते है थे और सारा दिन शांत मन से दिन भी गुजरता। वहीं दूसरी ओर सारा दिन ऑफिस के तनाव और गुस्से को लेकर हम घर आते हैं और आते ही पत्नी-बच्चों पर उतार देते हैं। आपके अशांत और बेचैन होने से पूरा दिन डिस्टर्ब रहे, दूसरों को भी डिस्टर्ब किया। काम प्रभावित हुआ। मन और तन दोनों को हानि हुई। वहीं दूसरी ओर शांत मन से काम करते तो बच्चे आपका खुशनुमा चेहरा देखकर प्रसन्न हो जाते और अगला दिन भी खुशनुमा हो जाता। **इसी तरह** हमें जीवन में जैसा शरीर, पद, पैसा, प्रतिष्ठा मिली है उसे ईश्वरीय अमानत, ईश्वरीय वरदान और पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का फल मानते हुए, उस परमेश्वर का सदा शुक्रिया अदा करते हुए, जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों में समभाव रखते हुए, इस यात्रा को सुखद और शांतिमय तरीके से पूरा करते हैं तो आसान और आनंदमय बन जाती है। जिन हालातों को हम बदल नहीं सकते हैं उनके बारे में सोचना व्यर्थ चिंतन है। हमें जीवन में क्या करना है, क्या बनना है और परमात्म चिंतन ही समर्थ, शुभ और श्रेष्ठ चिंतन है। आत्मा-परमात्मा का सत्य ज्ञान जीवन को अंधेरे से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है। इस ज्ञान को आप अपने नजदीकी किसी भी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाकर निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

✓ जो जैसा है उसे उसी रूप में स्वीकार करना एक कला है

अपने आत्मिक स्वरूप से सभी को आत्मिक स्थिति का अनुभव कराओ।

# संस्कार परिवर्तन का उत्सव 'दीपावली'

## मन के अशुद्ध विचार-विकार को सदा-सदा के लिए दे दें विदाई

### मन का आत्मदीप जलाएं, सच्ची दीवाली मनाएं...

### नए सद्विचारों का करें शुभ मंगल आगमन...

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। दीपावली का त्यौहार आते ही चारों ओर उमंग उत्साह की लहर छा जाती है। क्योंकि दीपावली अपने आप में पांच त्योहारों को लेकर आती है। वास्तव में देखा जाए तो यह पांच त्योहार मनुष्य जीवन की पांच पुरुषार्थ की बात है। इसलिए हर रीति से इंसान को सुखी संपन्न बनाने के लिए यादगार त्यौहार है। तभी इतना खुशी, हर्षोल्लास के साथ दीपावली मनाई जाती है। विशेषकर पहला पुरुषार्थ जो है वह है सफाई का अर्थात् शुद्धि का। मनुष्य घरों की सफाई करते हैं। अपने स्थान की सफाई करते हैं। वास्तव में सर्वप्रथम सफाई की जरूरत मन-वचन-कर्म को साफ करना। हमारे दृष्टि और वृत्ति की सफाई करनी है। मन के अंदर से नकारात्मक और अशुद्ध विचार को हम दूर करें। श्रेष्ठ सकारात्मक विचारों को ले आएं, यही मन की शुद्धि है। वाणी की शुद्धि अर्थात् बोल में मधुरता ले आएं। कर्म की शुद्धि और व्यवहार की शुद्धि अर्थात् अपने संस्कारों में श्रेष्ठता लाएं और हमारा व्यवहार कर्म एक-दूसरे के साथ बहुत मधुर हो। नेचुरली जब यह शुद्धि हम अपने अंदर लाते हैं तो दृष्टि-वृत्ति के अंदर पवित्रता सहजता से आ सकती है। वास्तव में सफाई से मतलब पवित्रता और शुद्धि को अपने जीवन में लाना है।

## जीवन में लाएं नवीनता...

दूसरा पुरुषार्थ दीपावली में होता व्यापारी अपने पुराने खाते को समाप्त कर नया बहीखाता आरंभ करते हैं। अर्थात् आज तक हमने कईयों के साथ जो भी मनमुटाव हुआ हो, कोई बुरा व्यवहार हो गया हो, उन पुराने खातों को समाप्त करें पुरानी बातों को समाप्त करें और आज से नए खाते का आरंभ करें अर्थात् नवीनता अपने जीवन के अंदर ले आएं। इसलिए व्यापारी लोग जब नई बहीखाता आरंभ करते हैं तो उस पर शुभ-लाभ जरूर लिखते हैं। शुभ लाभ तो तभी होगा जब लाभ का उल्टा करेंगे अर्थात भला करेंगे। जब हम सबका भला चाहते हैं, सबके प्रति शुभ भावनाएं और शुभकामनाएं मन में प्रवाहित होने देते हैं तब ही तो शुभ-लाभ की प्राप्ति होगी। फिर स्वास्तिका निकालते हैं इसको बनाकर श्रीगणेश करते हैं। स्वास्तिका शब्द संस्कृत के सु-अस्ति शब्द से आया है। 'सु' माना शुभ और 'अस्ति' माना जो सदा ही शुभ है। मतलब जीवन के अंदर हर एक पल जो कुछ भी होता है, इसी दृष्टिकोण से हम देखे हैं कि यह बात जो हुई हमें क्या चीज प्राप्त हुई। हमारे जीवन के अंदर कौन सा अनुभव को प्राप्त किया। वास्तव में देखा जाए तो बुरा कुछ भी होता है ही नहीं। कुछ भी परिस्थिति कोई भी समस्याएं कोई और बात आती है तो हमें जीवन में अनुभवी बना कर जाती है। अर्थात् कुछ न कुछ लेकर आती है। शुभ-लाभ ही तो हुआ जो हमें अनेक प्रकार के विघ्नों से मुक्त करते हैं। जब व्यक्ति अनुभवी हो जाता है तब अनेक प्रकार की आने वाली परिस्थितियों में सावधान हो जाता। अपने अनुभव के आधार से उस मैच्योरिटी से चलता है। तब विघ्नों को पहले ही समाप्त कर देता है।

## सभी को खिलाएं दिलखुश मिठाई...

दीपावली रावण के हार का उत्सव है। आइए इस दिवाली पर अपने अंदर के रावण को खत्म करते हैं। सिर्फ चार दिन की दीवाली नहीं जीवन ही दीवाली है। मिट्टी के इस शरीर में मैं पवित्र आत्मा हूं। यह दिया जब हम जलाते हैं तब अहंकार का अंधेरा खत्म हो जाता है। शांति का धर्म और प्यार की भाषा सम्मान की सभ्यता और एकता की संस्कृति ऐसी दुनिया हम सबको मिलकर बनानी है। इस सृष्टि पर हमें दीवाली लानी है। पुरानी बातें दबी पड़ी हैं। गलतफहमी की धूल चढ़ी है। अपमान के दाग लगे हुए हैं। यादें जिनकी अब जरूरत नहीं है। आइए, घर के साथ-साथ मन के कोने-कोने में सफाई करते हैं। नए कपड़े, नए बर्तन, दीवाली नवीनता का समय है। जीवन को शुद्ध बनाने के लिए नई सोच, नया व्यवहार, एक नया संस्कार अपनाते हैं। दीवाली पर हम सबको बहुत सुंदर तोहफा देना चाहते हैं- मेवा, चॉकलेट, मिठाई। इस दीवाली रिश्तों में मिठास भरते हैं। मीठे बोल, प्यार भरे बोल, सम्मान भरे बोल, उन्हें और हमें दोनों को खुशी देते हैं। आइए सबको दिलखुश मिठाई खिलाते हैं।

## सदा परमात्मा की याद में ही बनाएं भोजन

दीवाली का त्यौहार मिठाइयां बनाना, खाना और प्यार से खिलाना, भले कोई चाहता है हमारा तबीयत ठीक नहीं मैं मिठाई नहीं खाऊंगा लेकिन हम उसे कहते हैं अरे यह तो दीवाली है। दीपावली पर तो मिठाई खाना शगुन है इसलिए मिठाई जरूर खानी है। इस तरह हर एक त्यौहार पर मिठाई खाना शगुन क्यों है। मिठाई अर्थात् मुख मीठा। जो बोल हमारे मुख से निकले वह दूसरे को सुख दें। वह बोल मिठास और सम्मान से भरा हो। कोई गलती भी करे उसको भी शिक्षा देनी है, लेकिन मिठास से देनी है। लेकिन कई बार अगर हम ध्यान न रखें तब अच्छी बात भी बोलने के दौरान उसमें टोंट होता है। हमें लगता है हमने तो अच्छे से बात की लेकिन उसके अंदर एक भी कोई नेगेटिव बात हो तो दूसरे तक वह नेगेटिव एनर्जी पहुंच जाती है। उसको दर्द देती है, इसलिए हमेशा मीठे बोल और सम्मान भरा बोल बोलना चाहिए। खुद भी बोलें जिससे हमारा मन मीठा हो जाएगा और जिसके साथ वह बोल बोलेंगे उनका भी मन और मुख हमेशा मीठा रहेगा। त्यौहार में बड़े प्यार से मिठाई बनाते हैं। पहले मिठाई खरीदने का रिवाज नहीं था मिठाई बनाने का संस्कार था। मतलब जो हम घर में बना रहे हैं वह प्रसाद बना रहे हैं तो मिठाई खुद बनाना और परमात्मा की याद में बनाना और खाना है। ताकि वह बनाते समय परमात्मा की याद की शक्ति, शांति की शक्ति, दुआओं की शक्ति, प्यार की शक्ति उस मिठाई के कण-कण में रहे। तो वह सिर्फ मिठाई में नहीं हर रोज के भोजन में होना चाहिए। भोजन परमात्मा की याद में बनाया जाए और फिर भोग लगाकर परमात्मा की याद में खाया जाए क्योंकि वह प्रसाद बना है। परमात्मा को भोग लगाकर उसमें परमात्म वाइब्रेशन को इस तरह भर दें कि जो इस मिठाइयों और भोजन का थोड़ा निवाला भी खा ले तो उसे खाते ही परमात्मा की शक्ति, परमात्मा का प्यार और परमात्मा के साथ कनेक्शन जुड़ जाए। तब जिसका कनेक्शन परमात्मा से जुड़ जाएगा तब तो उसका जीवन हमेशा मीठा और खुशनुमा रहेगा।

## ज्ञान, चरित्र, श्रेष्ठ संस्कार, सद्गुणों रूपी धन का भी संचय करें

दीवाली पर सभी धन का आह्वान करते हैं अर्थात् श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं। धन की पूजा करते हुए

वास्तव में हम अपने जीवन के अंदर शुभ भावनाएं और शुभकामनाएं को प्रवाहित करते हैं। तभी अपने संस्कारों में श्रेष्ठ लक्षणों अर्थात् श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं। तब घर-घर के अंदर दीपक जग जाता है अर्थात जब हम श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं तो आत्मिक ज्योत जगाते हैं। आत्मिक ज्योत का भाव है जब आत्मा की ज्योति जलती है, तब उसके जीवन में अनेक प्रकार का धन जैसे छलकने लगता है। ज्ञान धन, सद्गुणों का धन, श्रेष्ठ चरित्र का धन, श्रेष्ठ संस्कारों का धन, क्योंकि आज संसार में इस बातों का अभाव है, सिर्फ धन का भाव नहीं है। अर्थात मनुष्य जीवन के अंदर ज्ञान, चरित्र, श्रेष्ठ संस्कार, सद्गुणों का अभाव है। इस वास्तविक धन का अभाव है जिसको अपने जीवन में आह्वान करते हुए जीवन को सजाएं। इसलिए दीपावली के दिन लोग नए वस्त्र को धारण करते हैं, नवीनता को अपनाते हैं अर्थात् अपने जीवन के अंदर इस तरह की नवीनता को अपनाते हुए श्रेष्ठ दीपावली जरूर मनाना है।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक मूल्य › 150 रुपए, तीन वर्ष › 450 आजीवन › 3500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक › ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो › 9414172596, 9413384884
Email › shivamantran@bkivv.org

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 October 2022
■ स्वामी: राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र